ओ३म्

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नयी दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

वर्ष 8 अंक 14   04 से 10 अप्रैल, 2013   दयानन्दाब्द 190   सृष्टि सम्वत् 1960853113   सम्वत् 2069   चै. कृ.-09

शुल्कः- एक प्रति 2 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

कैसे मनाएँ आर्यसमाज स्थापना दिवस?

—स्वामी अग्निवेश

११ अप्रैल, २०१३ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा। नया विक्रमी सम्वत् २०७० और आर्यसमाज का स्थापना दिवस। क्या यह सब आपको स्मरण है? आज की युवा पीढ़ी जनवरी फरवरी जानती व मानती है अतः चैत्र–वैशाख और शुक्ल–कृष्ण पक्ष से उसका क्या लेना–देना? नर्सरी से सीनियर सैकंड्री और बी. ए. से एम.ए. तक की इतिहास पुस्तकों में जब कहीं विक्रमादित्य है ही नहीं तो उसका जिक्र कौन करना चाहेगा? जब ईस्वी सम्वत् का ही प्रचलन है तो विक्रमी सम्वत् जानने का लाभ क्या होगा? और हम आर्य समाजियों के लिए आर्यसमाज स्थापना दिवस का औचित्य क्या है इस पर भी तनिक विचार करते चलें।

आर्यसमाज स्थापना दिवस को हम स्मरण भी करें तो किस हैसियत से क्योंकि किसी की कोई हैसियत तो आर्यसमाज में आज रह ही नहीं गई है। अपने पैरों पर खड़े होने का प्रयास करते हैं तो हमारी चेतना लौटती है और हम उन पर भड़क उठते हैं राष्ट्रीयता के नाम पर, स्वाभिमान के नाम पर, मानवता के नाम पर, एकता व संस्कति के नाम पर। कैसा मज़ाक है यह सब?

हम एकेश्वरवाद को मानते हैं लेकिन आचार, विचार और भावना के स्तर पर जातिवाद से मुक्त नहीं हो पाते, ऊँच–नीच की भावना से ऊपर नहीं उठ पाते, अस्पश्यता को त्याग नहीं पाते, हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई के भेदभाव को नष्ट नहीं कर पाते, लिंग भेद, नस्ल भेद, भाषा व क्षेत्र भेद की दीवारों को ढाह नहीं पाते। ऐसी एकेश्वरवादी, मानवतावादी, भ्रातत्व और समरसता की भावना के चलते आर्य समाज स्थापना दिवस को हम स्मरण भी करें तो उसका अर्थ क्या निकलता है? नहीं बनता कि आज़ादी को निगलने वाली पूँजीवादी व्यवस्था को ललकारे, लोकतन्त्र के नाम पर फल–फूल रही निरंकुशता को चुनौती दे, प्रगति के नाम पर पाँव पसार रही बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का बहिष्कार करे और समाजवाद के नाम पर पनप रहे व्यक्तिवाद को नकारे? यदि उसे ये अधिकार प्राप्त नहीं है या उन अधिकारों का प्रयोग करना हम भूल चुके हैं तो आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाने का औचित्य क्या रहेगा?

आर्यसमाज ने वेदों का शंखनाद किया लेकिन कुरआन, पुराण, बाईबिल का आज भी बोलबाला है। आर्यसमाज ने मूर्तिपूजा, तीर्थाटन, श्राद्ध–तर्पण, अवतारवाद, चमत्कार, फलित ज्योतिष, भाग्यवाद, गुरुडम और अन्धविश्वास का विरोध किया लेकिन वह पूरे जोर–शोर से मीडिया

एशिया–अफ्रीका, यूरोप व अमेरीका महाद्वीपों में आर्यसमाज रूपी ज्ञानाग्नि के प्रचण्ड होने की जो भविष्यवाणी एण्ड्रूज जैक्सन ने कभी की थी क्या वह भविष्यवाणी इस कारण कभी सत्य नहीं होगी कि आर्यसमाज फलित ज्योतिष में विश्वास नहीं रखता? जो अग्नि देश में ही ठण्डी होकर रह गई वह भला इन महाद्वीपों में क्योंकर प्रज्ज्वलित हो सकेगी? भारत को ही लें तो पूर्वांचल में हम कही ंनहीं हैं, कश्मीर व केरल में भी हमारा अस्तित्व कितना है? और जहाँ हम हैं वहाँ विभाजित हैं, बँटे हुए हैं, एक दूसरे से कटे हुए हैं। आपस की फूट महाभारत का कारण बनी जिस पर ऋषिवर दयानन्द ने बार–बार धिक्कारा, आक्रोश जताया, नसीहत दी लेकिन यह सब कुछ आर्यसमाज के काम नहीं आया। वह खुद फूट

किसी औचित्य की बात करें तो वह भी दूर तक नज़र नहीं आता। जहाँ गुटबाजी, मुकदमेबाजी, स्वेच्छाचारिता, अवसरवादिता, एक–दूसरे को गिराने व धता बताने के षड्यन्त्र, एक दूसरे को निकम्मा, दागदार, दगाबाज, अडंगेबाज सिद्ध करने की कवायद, एक दूसरे को लांछित किये बिना जहाँ नेतागिरी नहीं चलती, जूतियों में खीर बाँटे बिना संतोष नहीं होता, विघटन के बीज बोए बिना पाँचवाँ सवार नहीं बना जा सकता, चुनावी धांधली का ब्रह्मास्त्र चलाये बिना पासा सीधा नहीं पड़ता और संघियों को साथ लिये बिना कोई योजना सिरे नहीं चढ़ती तो वहां यदि आर्यसमाज स्थापना दिवस को स्मरण कर भी लिया जाये तो उसका औचित्य कितना ठहरता है?

अपने जिगर के आधे कफन से अपनी लाज ढांपने वाली गुलाम भारत की एक माँ को देख ऋषि दयानन्द रात भर सो नहीं सके थे, आँसू बहाते रहे थे लेकिन एक हम हैं कि आज देश की आधी आबादी रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा, न्याय से वंचित है लेकिन हमारी आँखों से किसी के लिए दो बूंद आँसू नहीं टपकते। किसानों की जबरन जमीन हड़पने के लिए सिंगूर व नन्दी ग्राम में बर्बर पुलिस जलियांवाला बाग का मंजर उपस्थित कर जाती है तो हमारे भीतर किसी के प्रति करुणा तो किसी के प्रति क्षोभ तक जागत नहीं होता। करोड़ों बच्चे माँ के पेट से ही बन्धुआ मजदूर बन कर जन्म लेते हैं लेकिन न हमारा दिल पसीजता है और न चेतना में आक्रोश और विद्रोह पैदा होता है। बांध बनाने के नाम पर वनवासी व आदिवासी बन्धुओं को जल, जंगल, जमीन से बेदखल कर दिया जाता है और पुनर्वास के नाम पर बंजर, पथरीली या मरुस्थली जमीन का टुकड़ा उनके सामने फेंक दिया जाता है लेकिन उन्हें उनका हक, अधिकार और न्याय दिलाने को हमारे हाथ नहीं उठ पाते। जब लाचार लोग धर्मांतरण का चोला ओढ़ कर

स्वाधीनता आन्दोलन में आर्य समाज भी सहभागी था लेकिन आज़ाद भारत ने उसकी भूमिका को ठीक उसी तरह भुला दिया जैसे क्रान्तिकारियों और आज़ाद हिन्द सेना की भागीदारी को भुला दिया गया। आर्य समाज ने अपने त्याग और बलिदान की कीमत देश से नहीं मांगी तो क्या उसका इतना भी अधिकार

द्वारा आज भी फैल रहा है। आर्यसमाज ने साम्प्रदायिकता और जातिवाद का विरोध–किया, भ्रष्टाचार और नशाखोरी का विरोध किया, शोषण और उत्पीड़न का विरोध किया लेकिन ये सभी बुराइयाँ भारतीय समाज को आज भी खोखला कर रही हैं। तो सवाल उठता है कि वह आर्यसमाज कहाँ है जिसका आज स्थापना दिवस है?

का शिकार होकर बिखर गया। कौरव तो अपनी कर्मगति का शिकार हुए लेकिन पाण्डवों की एकता व विजय को कारगर बनाने के लिए कष्ण सफल हो गये। क्या ऐसा कोई कष्ण आर्यसमाज को कभी नहीं मिलेगा? कष्ण तो कई हैं लेकिन हम ही पाण्डवों की भूमिका में न रह कर दुर्योधन और शकुनि की चालों का शिकार बने हुए हैं तो आर्यसमाज स्थापना दिवस पर उसके उद्धार की बात किस सिरे से शुरू हो सकेगी?

११ अप्रैल को आर्यसमाज स्थापना दिवस है, इतना तो हमें भी स्मरण है लेकिन उसे मनाने के लिए जो परिवेश चाहिएँ, जो साधन चाहिए, जो आत्म–बल चाहिए, जो एकता व भाईचारा चाहिए, गर्व करने को जो उपलब्धियाँ चाहिएँ, वह सब कहाँ हैं? ये सब इसलिए नहीं हैं क्योंकि हमने साधना का पथ त्याग दिया है, अध्यात्म का रास्ता छोड़ दिया है, संध्या, सत्संग, स्वाध्याय को जीवन से निर्वासित कर दिया है, करुणा, संवेदना, परोपकार के भाव इस पाषाण हृदय में अब पैदा नहीं होते, यदि कुछ बचा है तो वह है दिखावा, प्रदर्शन, औपचारिकता, रीति–रिवाज का निर्वहण भर जिसका न ओर है न छोर है, जिसकी न कोई जड़ है, न औचित्य है, जिसकी न मर्यादा है न कोई अर्थ है।

बन्धुवर ! तनिक सोचिए कि आखिर यह तमाशा कब तक चलता रहेगा और हम मौन–भाव से इस तमाशे को आखिर कब तक यों ही देखते रहेंगे? आर्यसमाज की इस दयनीय स्थिति से हमें निराश तो कदाचित नहीं होना चाहिए बल्कि जाग कर, उठ कर यथास्थितिवाद से इसे मुक्त कराना होगा। यह कार्य सत्ता परिवर्तन से नहीं व्यवस्था परिवर्तन से ही सिद्ध होगा जिसके लिए हमें मानसिक रूप से अपने को तैयार करना होगा। ●

ज्ञातव्य हो कि आज से वर्षों पहले सन् 1970 में आर्य समाज स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर ही स्वामी इन्द्रवेश जी और स्वामी अग्निवेश जी ने स्वामी ब्रह्ममुनि परिब्राजक

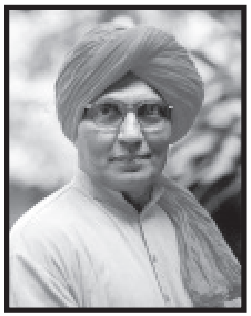

स्वामी अग्निवेश जी

स्वामी इन्द्रवेश जी

जी से संन्यास की दीक्षा ली थी। देश में व्याप्त भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता, जातिवाद, नारी उत्पीड़न, शोषण, पाखण्ड सहित समाज को गर्त में ले जाने वाली तत्कालीन समस्याओं के निराकरण के लिए स्वामिद्वय ने आर्य समाज के मंच से वैदिक समाजवाद के माध्यम से आर्य राष्ट्र बनाने का संकल्प लिया था। वैदिक समाजवाद के माध्यम से 'आर्यराष्ट्र' बनाने के संकल्प को पूर्ण करने के लिए उसी दिन 'आर्यसभा' के नाम से एक राजनीतिक पार्टी का भी गठन किया गया था। पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी आज हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनके आर्यराष्ट्र बनाने के स्वप्न को पूर्ण करने के लिए युवाओं को पूरी ताकत के साथ काम करना पड़ेगा। अमेरिका द्वारा प्रायोजित पूंजीवाद को मिटाने के लिए तथा वैदिक समाजवाद को लाने के लिए आज आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर हमें संकल्प लेना है तथा प्राणपण से युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की सामाजिक, आर्थिक, राष्ट्रीय, धार्मिक सभी नीतियों को समाज में लागू करने के लिए प्रयत्नशील होना है।

"आर्य राष्ट्र बनायेंगे, पूंजीवाद मिटायेंगे" स्वामी इन्द्रवेश जी तथा स्वामी अग्निवेश जी के इस नारे की गूँज को गूँजाते हुए समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, नशाखोरी, नारी उत्पीड़न, कन्या भ्रूण हत्या, शोषण, पाखण्ड के विरूद्ध एकजुट होकर देश और दुनिया से इन बुराइयों को मिटाने के लिए कृत संकल्पित हों तभी हमारा आर्य समाज स्थापना दिवस मनाना सार्थक हो सकेगा।

नोट : 14 अप्रैल को बाबा साहब अम्बेडकर जन्मदिवस मध्यान्ह 3.00 से 5.00 बजे तक सार्वदेशिक सभा कार्यालय के सभागार में समारोह पूर्वक मनाया जायेगा, आप सबकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

सम्पादक
प्रो. कैलाशनाथ सिंह

आर्य समाज का न्याय मंच

स्वामी अग्निवेश

आर्य समाज का अर्थ है- अच्छे लोगों का, श्रेष्ठ लोगों का, ईमानदारी से मेहनत करने वालों का समाज। इसमें न कोई जन्मगत जातिवाद का भेदभाव हो, न धार्मिक साम्प्रदायिकता का भेदभाव हो। औरतों को पुरूषों के बराबर सम्मान, स्वाभिमान मिले। किसी इन्सान को या इन्सान की शक्ल वाले को भगवान न माना जाय और न ही किसी भी इन्सान के प्रति अन्धश्रद्धा के साथ उसे अपना गुरू धारण किया जाए।

मानवमात्र के प्रति मित्रता बढ़ाते हुए, प्राणिमात्र के प्रति सहअस्तित्व एवं करूणा जगाते हुए, सभी मनुष्यों को आत्मचिन्तन एवं आत्म निर्णय का पूरा अधिकार देते हुए हमें सत्य, प्रेम, करुणा एवं न्याय के सत्य सनातन आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित सुन्दर समाज बनाता है। इस महान कार्य के लिये हमें निरन्तर सत्य की साधना तथा न्याय के लिये संघर्ष करना होगा। सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना होना। प्रत्येक को अपनी ही उन्नति समझनी होगी।

इस विचार को सहज रूप से समझकर मानने वाले 101 लोगों का एक आर्यसमाज (ईकाई) गठित हो। एक व्यक्ति संयोजक हो जिसे बाकी 100 लोगों का नाम याद हो- परस्पर विश्वास हो और हर तरह के सुख दुःख का साथी हो। बाकी सौ लोगों में कम से कम 30 महिलायें हों, आदिवासी, दलित एवं अल्पसंख्यक समाज के लोगों का भी प्रतिनिधित्व हो। सप्ताह में एक बार किसी सुविधा जनक सार्वजनिक स्थान पर संगठित विचार-विमर्श करें, उपस्थिति दर्ज करें और किसी एक के प्रति भी कोई जुल्म हो रहा हो तो मिलकर आवाज़ उठायें।

भारत के मेहनतकशों की दिहाड़ी मज़दूरी 500 रू. से कम नहीं और महीने की 15000 हजार रू. से कम नहीं।

सरकार के दफ्तर में तीस साल की पक्की नौकरी की गारंटी के साथ दिन के आठ घण्टे के काम के लिए यदि 500 रू. दैनिक और 15000 रू. का मासिक वेतन मिलता हो तो असंगठित क्षेत्र में धूल-धक्कड़, धूप-बारिश घरवाली पर ही हाथ उठाये, अपने बच्चें तक को पढ़ने के बदले बंधुआ मज़दूरी के लिये भेजे। यही है सरकार और समाज का कडुआ सच।

यदि हम सब उसी एक ईश्वर की संतान हैं-जिसके सूरज की धूप सबके लिए बराबर है, जिसकी हवा में सांस लेने का और जिसकी नदियों के पानी को पीने का सबको बराबर का हक है तो फिर हममें जन्म के आधार पर ऊँच-नीच और छुआछूत का भेदभाव क्यों?

कुछ लोगों के पास पूरे एकड़ में बनी हुई आलिशान कोठियां हैं और हमारे परिवार को सिर छिपाने के लिए सौ गज का प्लॉट नहीं है जबकि पत्थर तोड़ने से लेकर ईंट पकाने का काम और गारा सीमेंट चुनाई करने का काम हम करते हैं, दूसरों की कोठियां सड़क पुल का निर्माण हम करते हैं। हमारे पास दो कमरे का अपना मकान क्यों नहीं?

आओ किसान मज़दूर साथियों! आध्यात्मिक सामाजिक क्रांति के झण्डे के नीचे अपनी जबरदस्त ताकत के साथ अपनी मांगों का ऐलान करें :-

1. अकुशल असंगठित मज़दूर की कम से कम मज़दूरी प्रतिदिन 500 और महीने की पंद्रह हजार रू. (15000 रू) होनी चाहिए।

2. जमीन के मालिक किसान की फसल की लागत में किसान की मज़दूरी (तृतीय श्रेणी के कर्मचारी के बराबर) 850 रू. प्रतिदिन और महीने की 25000 रू. होनी चाहिए।

3. आवासहीन परिवारों के लिये कम से कम एक सौ गज का प्लॉट और मकान बनाने के लिए एक लाख रू. बिना ब्याज का कर्ज।

4. मज़दूर बस्तियों के पास से शराब और मांस की दुकानें हटाई जाएं।

5. सब बच्चों की पढ़ाई एक जैसी हो, बिना अमीर-गरीब के भेदभाव के और शिक्षा में सत्य, प्रेम, करूणा हो जाओ! शोषण अन्याय एवं ग़ुलामता मुक्त समाज का निर्माण ही आर्य समाज का मिशन है।

हम चाहते हैं एक समतामूलक समाज जिसमें गरीब-अमीर के बीच चौड़ी खाई को पाट दिया जाए, जिसमें जातिवाद के भेदभाव को मिटा दिया जाए, जिसमें सब बच्चों को पढ़ाई लिखाई खेलकूद समान रूप से उपलब्ध हो-एक ऐसा सुन्दर समाज जो शराब और मांसाहार की कुरीतियों से मुक्त हो जिसमें बेटा और बेटी को बराबर का दर्जा मिले, बेटी को बेटे के बराबर प्यार और आगे बढ़ने का अधिकार मिले।

हम सब एक ईश्वर एक अल्लाह और एक वाहेगुरू को मानने वाले हैं तो आपस में साम्प्रदायिकता का ज़हर क्यों? चोटी - दाढ़ी की लड़ाई क्यों? मन्दिर - मस्जिद का बखेड़ा क्यों?

मोबाइलः- 9810976705
E-mail- agnivesh70@gmail.com

चार दिवसीय वेद प्रचार समारोह सोल्लास सम्पन्न

आर्य समाज, बी–ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली में 21 फरवरी, 2013 से 24 फरवरी, 2013 तक चार दिवसीय वेद प्रचार समारोह हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

बायें से सर्वश्री वशिष्ठ मुनि 'आर्यदर्वेश, सुखदेव आर्य तपस्वी, हरवंश लाल कोहली, डॉ. स्वामी आर्येशानन्द सरस्वती, ऋषि चन्द्रमोहन खन्ना, के. एल. गुप्ता, उद्बोधन देते हुए प्रधान डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री नीचे विराजमान

21 फरवरी को आयोजित महिला सम्मेलन की मुख्य वक्ता डॉ. निष्ठा विद्यालंकार थीं। शेष तीनों दिन प्रातः सांय प्रख्यात वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के प्रेरक प्रवचन हुए। अपने प्रवचनों में उन्होंने कहा कि सम्पत्ति, संतान, सफलता सौभाग्य से प्राप्त होती है। उन्होंने कहा कि यज्ञ जीवन की सभी कामनाओं को पूर्ण करता है, किन्तु समझने की बात यह है कि यज्ञ की आत्मा 'स्वाहा' है, यज्ञ का प्राण – 'इदन्न मम' है और यज्ञ का सार 'सुगन्धि' है। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता आचार्य चन्द्रशेखर जी ने समारोह को संबोधित करते हुए आगे कहा कि जीवन एक गणित है। गणित में जोड़ना,

में कठोर मेहनत का काम करने वाले मज़दूर औरत या आदमी को मज़दूरी का यही रेट क्यों ना मिले?

आज दिहाड़ी मज़दूरों को 30 साल तो क्या तीन दिन के काम की भी गारंटी नहीं मिलती।

मनरेगा में सरकारी रिपोर्ट के अनुसार सालाना 100 दिन की गारंटी के बदले केवल 17 दिन की औसत गारंटी मिली है-मज़दूरी भी 160 के बदले कुल 50 रूपये मिलती है - प्रतिदिन औसत में।

इतनी हाड़-तोड़ मेहनत करने के बावजूद थोड़ी सी कमाई को लूटने के लिए झुग्गियों के पास ही शराब की दुकानें खोल दी जाती हैं-जिसे पीकर मज़दूर बेहोश हो जाए, आपस में गाली-गलौज और लड़ने लगे अपनी और न्याय के आध्यात्मिक मूल्यों का समावेश हो।

6. किसानों की फसल का बीमा हो और फसल की लागत तय करने में जमीन की लागत पर बैंकदर पर ब्याज जोड़ा जाए।

7. जाति-पाति तोड़कर अंतर्जातीय विवाह करने वाले युवा दम्पत्तियों को नौकरी आदि में पांच प्रतिशत का आरक्षण मिले और पहले से आरक्षित कोटे के लड़के-लड़कियों को प्राथमिकता मिले।

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक, एवं सामाजिक उन्नति करना। **- महर्षि दयानंद**

''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' संसार के मेहनतकशों एक

पाकिस्तान–बांग्लादेश से उजाड़े गये हिन्दुओं को समुचित नागरिकता दी जाये

– स्वामी अग्निवेश

पाकिस्तान में उत्पीड़न की वजह से पलायन होकर आए तमाम हिंदुओं के भारत में सम्मान जनक एवं बेहतर जीवन के लिए स्वामी अग्निवेश ने भारत सरकार से बिना विलम्ब किए भारतीय नागरिकता के साथ जीवन यापन की मूलभूत सुविधाएं व आर्थिक सहायता देने की अपील की है। उन्होंने कहा यह बड़े खेद की बात है पाकिस्तान में साधनों और सुविधाओं से वंचित कर हिंदुओं को नारकीय जीवन जीने के लिए अथवा धर्मपरिवर्तन के लिए बाध्य किया जा रहा है। जिसकी वजह वे लगातार पलायन करके भारत आ रहे हैं और उनमें से अधिकांश वापिस नहीं जाना चाहते। इसी कड़ी में अभी हाल ही में 480 हिंदू पाकिस्तान के सिंध प्रांत से दिल्ली आए हैं। स्वामी अग्निवेश ने कहा कि आर्यसमाज उनकी मदद के लिए हरसंभव कोशिश करेगा। भारत पाक विभाजन बीसवीं सदी की सबसे बड़ी मानवीय त्रासदी थी जिसकी पीड़ा पाकिस्तान में रह रहे हिंदू आज भी भोग रहे हैं। पाकिस्तानी माहौल में मज़हबी कट्टरवाद का यह आलम है कि विभाजन के समय हिन्दुओं की संख्या 10 प्रतिशत से अधिक थी जो आज घटकर 2 प्रतिशत से कम रह गई है। ये दो प्रतिशत भी आये दिन प्रताड़ित होते रहते हैं।

यह एक बहुत पेचीदा मसला है और हमें इसे धर्म व संकीर्ण राजनीति से ऊपर उठकर मानवीय आधार पर देखना चाहिए। उन्होंने कहा कि वर्तमान में पाकिस्तान एवं बांग्ला देश से भारत आने के लिए मज़बूर शरणार्थी हिंदुओं की देखभाल व सहायता के लिए गृहमंत्रालय अलग से एक प्रकोश्ठ बनाना चाहिये। स्वामी अग्निवेश ने कहा कि आर्य समाज का एक शिश्ट मंडल शीघ्र ही भारत के गृहमंत्री सुशील कुमार शिंदे से मिलकर यह मांग उठायेगा।

घटाना, गुणा करना और भाग देना सब कुछ होता है। जिंदगी में यह सब जरूरी है। जिन्दगी में दोस्तों का जोड़ करो, दोस्त खुद–ब–खुद बढ़ जायेंगे। दुश्मनी को घटा दो, दुश्मन खो जायेंगे। खुशियों का गुणा कर दो, खुशियाँ चौगुनी हो जायेंगी और दुःख का भाग कर दो, दुःख स्वतः कम हो जायेंगे। इतना सब कुछ कर लो जिन्दगी का वर्गमूल अपने आप निकल आयेगा।

रविवार 24 फरवरी, 2013 को आयोजित समापन एवं सम्मान समारोह में अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए डॉ. स्वामी आर्येशानन्द सरस्वती जी ने कहा कि ऋषिवर दयानन्द ने बड़े से बड़े प्रलोभनों को ठुकरा दिया और कभी अपने सिद्धान्तों से समझौता नहीं किया, वे 18–18 घण्टों तक समाधि में लीन रहते थे। हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेते हुए वेदानुकूल जीवन व्यतीत करना चाहिए। श्री वशिष्ठ मुनि 'आर्य दर्वेश' जी ने अष्टांगयोग की सरल सुबोध व्याख्या करते हुए उसके विभिन्न अंगों को जीवन में उतारने की प्रेरणा दी और कहा कि हमारा यह चर्मशरीर चरम शरीर हो जाये।

इस अवसर पर टंकारा ट्रस्ट के मंत्री श्री रामनाथ सहगल जी का माल्यार्पण, शॉल, प्रतीक चिन्ह आदि से भव्य सम्मान करते हुए उन्हें टंकारा ट्रस्ट के लिए 51 हजार की धनराशि भेंट की गई। उन्हें आर्य मार्तण्ड के सम्मान से विभूषित किया गया। मनन आश्रम पिंडवाड़ा के संस्थापक डॉ. स्वामी आर्येशानन्द सरस्वती जी को अध्यात्म पथ पत्रिका की ओर से आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री एवं डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया जी ने माल्यार्पण, प्रतीक–चिन्ह एवं शॉल ओढ़ाकर अध्यात्म मार्तण्ड सम्मान से विभूषित किया।

समापन समारोह में श्री कृष्ण बवेजा जी की पुस्तक 'वेदज्ञान–एक संक्षिप्त परिचय', डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया के ग्रन्थ – शून्य से शिखर तक : स्वामी श्रद्धानन्द' एवं 'अध्यात्म पथ' के विशेषांक का लोकार्पण मंच पर आसीन संन्यस्त मण्डल, आर्य नेताओं एवं विद्वानों ने किया।

समारोह में श्री रामनाथ जी सहगल, स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती (पूर्वनाम दिनेशचन्द्र त्यागी) ऋषि चन्द्रमोहन खन्ना, डॉ. राणा गन्नौरी आदि ने अपने उद्बोधन दिये।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में श्री डालेश त्यागी ने ध्वजारोहण करते हुए अपने उद्बोधक विचार रखे तथा युवकों को जोड़ने की प्रेरणा दी। अपने सुमधुर भजनों से साध्वी उत्तमा यति जी एवं पं. सहदेव सरस ने सबका मन मोह लिया। यज्ञ के ब्रह्मा, आचार्य योगेन्द्र शास्त्री एवं उनके सहयोगी पं. जगमाल जी थे।

समाज के यशस्वी प्रधान डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया ने सभी अभ्यागतों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए मोक्ष प्राप्ति की दिशा में पग बढ़ाने की तथा सदैव सत्कर्म करने की प्रेरणा दी। समाज के मंत्री श्री केवल कृष्ण कपानिया एवं प्रचार मंत्री श्री योगेश्वर चन्द्र आर्य ने भी सभी अभ्यागतों का स्वागत किया।

कार्यक्रम में सर्वश्री विनोद बब्बर (सम्पादक राष्ट्रकिंकर), सुरेन्द्र कुमार मोंगिया (सम्पादक अखण्डता संग्राम) , धन सिंह खोबा 'सुधाकर' (प्रतिष्ठित कवि), वरूणेन्द्र (टी. वी. पत्रकार), वेद प्रकाश (समाजसेवी), हरवंशलाल कोहली (शुद्धि समाचार), डॉ. सरोज दीक्षा एवं विभिन्न समाजों के पदाधिकारी उपस्थित थे। खचाखच भरे हाल में यह समारोह ऋषिलंगर के साथ सम्पन्न हुआ।

– योगेश्वरचन्द्र आर्य, प्रचार मंत्री

11 अप्रैल नव सम्वत्सर पर विशेष

भारतीय नववर्ष का शुभारम्भ

सद्विचार, सद्भावना, उपजे नूतन हर्ष।
मनसा वाचा कर्मणा मंगलमय हो नववर्ष।।
नव आलोक धरा पर फैले, फैले आज चतुर्दिक हर्ष।
नई उमंग, नई तरंग, नव अभिलाषा का हो उत्कर्ष।।

— पं. वेदप्रकाश शास्त्री, पंजाब

भारतीय संस्कृति में विभिन्न पर्वोत्सव हार में मोतियों की भांति पिरोये हुए हैं। जैसे मोतियों को हार से पृथक नहीं किया जा सकता, वैसे ही इन पर्वों को भारतीय संस्कृति से पृथक नहीं किया जा सकता। ये पर्व हमारे जीवन में सुख, शान्ति, हर्षोल्लास एवं नवप्रेरणा का संचार करते हैं। 11 अप्रैल को प्रारम्भ हो रहा नवसंवत्सर सम्पूर्ण मानव जाति एवं समस्त प्राणियों के लिए मंगलमय हो।

(1) सृष्टि संवत्सर — सृष्टि की उत्पत्ति चैत्र मास शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को हुई थी। अतः सृष्टिसंवत्सर का प्रारम्भ इसी समय हुआ था। ज्योतिष के हिमाद्रि ग्रन्थ के अनुसार —

चैत्रमासि जगद् ब्रह्म ससर्ज प्रथमेऽहनि। शुक्लपक्षे समग्रन्तु तदा सूर्योदये सति।।

चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही प्रथम सूर्योदय होने पर मेष संक्रान्ति और काल के विभाजन वर्ष अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, दिन, नक्षत्र, मुहूर्त, लग्न, पल, विपल आदि एक साथ प्रारम्भ हुए। उसी समय से यह सृष्टि संवत्सर के नाम से प्रचलित हुआ।

(2) सृष्टि के आदि में वेदज्ञान — वेद मानव संस्कृति, धर्म, कर्म, उपासना,

नव संवत हो मंगलकारी

— स्व. राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति

नव संवत् हो मंगलकारी, जन—जन में आये सद्बुद्धि।
परहित के भावों की मन में, सहसा हो अभिवृद्धि।।
मंगलमय हो नव संवत्सर, मंगलमय हो घर आंगन।
मंगलमय हो इस धरती का, सत्य शिवं सुन्दर कन—कन।।
आज हमारे अन्तस्तल में, प्रेम भाव हो पुनः प्रदीप्त।
करूणा क्षमा, सहिष्णुता से हो, अन्तर्मन हो फिर उद्दीप्त।।
भाव शत्रुता के मिट जायें, उर में जागे मित्र भावना।
पूर्ण सदा हो मानव मन की इच्छा के अनुकूल कामना।।
राम कृष्ण की, दयानन्द की, परम्परा हो फिर जीवित।
करें परस्पर स्वच्छ हृदय से, एक दूसरे का हम हित।।
मिटे नये इस संवत्सर में, फैला जो अन्याय अनय।
सभी दिशाएँ हों मंगलमय, जन—जन हो वसुधा पर निर्भय।।
मानवता के मंगलकारी पथ पर ही अब बढ़े चरण।
सच्चरित्रता का ही हम सब, जीवन पथ पर करें बरण।।

है, जिसे हम भूलते जा रहे हैं और ईस्वीय सन् के प्रारम्भ को ही नववर्ष का प्रारम्भ मान बैठे हैं।

ईस्वीय सन् जनवरी मास में प्रारम्भ होता है, परन्तु इस महीने में कड़ाके की सर्दी पड़ती है, जो कि पहले से ही प्रारम्भ हो चुकी होती है। वनस्पतियों में भी कोई परिवर्तन या नवीनता दृष्टिगोचर नहीं होती, अतः जनवरी से नववर्ष मानने का कोई तुक नहीं है। इसे प्राचीन परम्परा मानकर स्वीकार नहीं किया जा सकता। चार—पाँच शताब्दियों से पूर्व ईस्वीय सन् का प्रारम्भ भी अप्रैल मास से माना जाता था, जो वसंत ऋतु में पड़ता था। जनवरी की अपेक्षा यह अधिक युक्तियुक्त था। इतना होने पर भी वित्तीय वर्ष के रूप में आज भी ईस्वीय सन् का प्रारम्भ अप्रैल मास से माना जाता है। जो अपनी प्राचीनता का द्योतक है।

आज हमने अपने दैनिक जीवन में ईस्वीय सन् को अधिक महत्ता प्रदान कर रखी है, जबकि इसकी अपेक्षा विक्रमी संवत् कहीं अधिक श्रेष्ठता, प्राचीनता और विशिष्टता को धाारण किए हुए हैं।

(8) आत्मचिन्तन का पर्व — प्रत्येक नववर्ष हमारे लिए आत्मचिन्तन का पर्व होता है। हम सम्पूर्ण वर्ष में किये गये कार्यों का निरीक्षण करें। शुभकार्यों को ध ाारण करें और अशुभ कार्यों को छोड़ने का संकल्प लें। व्यापारी वर्ग वर्ष भर में किए गए व्यापार में लाभ—हानि पर विचार करें।

ज्ञान–विज्ञान के मूल आधार हैं। वेदों का ज्ञान सदैव सत्य, सनातन, शाश्वत, अपरिवर्तनीय, सार्वभौम, अपौरुषेय एवं सर्वमान्य है। ऋग्., यजु:, साम और अथर्व इन चारों वेदों का ज्ञान उस परम पिता परमात्मा ने मानव सृष्टि के आदि में अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा ऋषियों के हृदय में प्रकाशित किया था, अतः वेदों का प्रादुर्भाव भी मानव सृष्टि के आदि में हुआ था, जिससे सूर्य के प्रकाश के साथ–साथ वेदज्ञान का प्रकाश भी चहुँदिशि विस्तृत हुआ।

भ्रष्टाचार मिटे, जिसने हैं, किया राष्ट्र को अब आक्रान्त।
जागृति का नवमंत्र मिले अब, जागे मानव मन उदभ्रान्त।।
रूदन मिटे इस वसुन्धरा का, छा जाये कुल हर्षोल्लास।
स्वार्थवाद को दिये तिलांजलि, जगे धरा पर नूतन आश।।
मानवता की जय का डंका, बजे पुनः भूमण्डल पर।
जन–जन हित हो मंगलकारी आया जो नव संवत्सर।।

– मुसाफिरखाना, सुलतानपुर, उ. प्र.

(3) **युगाब्द का आरम्भ –** सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग इन चारों युगों का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है, अतः इन युगाब्दों का अपना महत्त्व है। आजकल कलियुग चल रहा है, जिसके 5108 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और 5109वाँ युगाब्द आरम्भ हो रहा है।

(4) विक्रमी संवत् – महान् सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की महत्त्वपूर्ण विजयों के उपलक्ष्य में विक्रमी संवत् का शुभारम्भ हुआ। आज भी यह संवत् हमें अन्याय पर विजय प्राप्ति के लिए प्रेरित कर रहा है।

(5) आर्य समाज स्थापना दिवस – वैदिक धर्म के सतत प्रचारार्थ और मानव मात्र के उपकार के लिए महर्षि दयानन्द ने बम्बई (मुम्बई) में डॉ. मानिक चन्द्र की वाटिका में चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा संवत् 1932 तद्नुसार 7 अप्रैल, 1875 को आर्य समाज की स्थापना की थी, जो कि आज भी उनके संदेश को जन–जन तक पहुँचाने हेतु प्रयासरत है। प्रभु सभी आर्यों को ऐसी शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करें जिससे इस पुनीत कार्य में सफल हो सकें।

(6) नववर्ष का आगमन – सामान्यतः सिद्धान्त की बात यह है कि नववर्ष के आगमन के समय कुछ न कुछ नवीनताएँ अवश्य होनी चाहिए। ये नवीनताएँ ऋतुओं एवं वनस्पतियों में आने वाली परिवर्तन के कारण हो सकती हैं।

चैत्रमास में वसंत ऋतु का आगमन होता है। इस ऋतु में प्रकृति की अनुपम छटा होती है। आकाश स्वच्छ एवं निर्मल होता है। पेड़–पौधों एवं लताओं पर रंग–बिरंगे खिले हुए फुलों को देखकर मन की कली भी खिल उठती है। वसंत ऋतु में न अधिक ठंड होती है, न अधिक गर्मी। मौसम सुखदायी होता है। मन्द–मन्द गतिशील पवन अपने स्पर्श से आनन्दित एवं रोमांचित कर देती है। इसीलिए वसंत को ऋतुराज कहा जाता है। अतः इसी वसंत ऋतु में नववर्ष का प्रारम्भ मानना वैज्ञानिक दृष्टि से उचित है।

वसंत ऋतु में वनस्पतियों में भी नवीनता आ जाती है। पुराने पत्ते झड़ जाते हैं और नई कोंपलें निकलती हैं नई कोंपलों का निकलना ही नवीनता का द्योतक है, जो वसंत ऋतु का स्पष्ट लक्षण है। अतः वनस्पतियों की दृष्टि से चैत्र में ही नववर्ष का प्रारम्भ मानना चाहिए।

(7) ईस्वीय सन् के नववर्ष से तुलना – पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रंग कर ऐसा प्रतीत होता है कि हम भारतीयों ने अपना स्वत्व ही खो दिया है। वस्तुतः विश्व में अपनी भी एक विशेष पहचान है, अपना राष्ट्र है, अपनी सभ्यता और संस्कृति है। अपना संवत् एवं वर्ष

आई हुई त्रुटियों को दूर करते हुए उन्नति की ओर अग्रसर हो।

छात्रवर्ग के लिए शिक्षा का नया सत्र इसी समय अप्रैल मास में शुरू होता है, अतः छात्र भी पिछले परीक्षा परिणाम पर विचार करते हुए और अधिक कर्मठता, लग्नशीलता एवं परिश्रमपूर्वक शिक्षा को प्राप्त करने का व्रत लें।

मंगलकामना :– यह नववर्ष बन्धु–बान्धव, सम्बन्धीजन, इष्टमित्र, नर–नारी सभी के लिए प्रेम, गौरव, सुख, समृद्धि उन्नति एवं प्रसन्नता से परिपूर्ण हो। इस परम पुनीत अवसर पर हम सभी सेवा, परोपकार, सदाचार, सद्व्यवहार, मानवकल्याण, राष्ट्रीय एकता, अखण्डता और प्राचीन गौरव को प्राप्त करने का व्रत लें।

सार्वदेशिक सभा की ओर से नव वर्ष की मंगल कामना

नव वर्ष यानि सम्वत् 2070 का आगमन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 11 अप्रैल 2013 को होगा। इसी दिन ऋषिवर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संसार को वेदों का ज्ञान देने और मानव मात्र की सेवा का संकल्प लेकर सर्वप्रथम आर्य समाज की स्थापना की थी।

सार्वदेशिक परिवार नववर्ष तथा आर्य समाज स्थापना दिवस के पावन पर्व पर समस्त आर्य जनों एवं पाठकों के प्रति शुभ कामना प्रकट करते हुए सुख, समृद्धि तथा ऐश्वर्य की कामना करता है।

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती	**स्वामी आर्यवेश**
अध्यक्ष	संयोजक

सार्वदेशिक सभा संचालन समिति
''दयानन्द भवन'' ३/५, आसफ अली रोड,
नई दिल्ली-२

संस्कृत, वेद तथा आत्म साधना के केन्द्र बनें आर्य समाज

■ पं० अभयदेव शर्मा

'आर्य समाज' शब्द इसके संस्थापक, दयानन्द की इस संस्था से अपेक्षा का सूचक है। दयानन्द इस संस्था को एक ऐसे केन्द्र के रूप में देखना चाहते होंगे जो मनुष्य के व्यक्तित्व में निहित 'आर्य' को उजागर कर दे। यह संस्था आर्यों का समुदाय हो, और आर्यत्व का ज्यों–ज्यों उदय अन्य नर–नारियों में होता जाए त्यों–त्यों यह समुदाय बढ़ता जाए, और अन्ततः अपने इस भूतल के सब मनुष्य आर्य हो जाएं।

आर्य होना या न हो पाना, व्यक्ति के संकल्प–बल, जागरूकता और तप पर निर्भर करता है। किसी संस्था का शुल्क देकर 'आर्य' बनने की सस्ती, सरल तरकीब दयानन्द के चित्त में कभी नहीं रही होगी। आर्य–समाज नामक संस्था तो मात्र सवा सौ वर्षो से कुछ अधिक की आयु की है। पर 'आर्य' संज्ञा तो बहुत–बहुत प्राचीन है। धरती की सबसे प्राचीन पोथी–वेद का यह शब्द मनुष्य के दो वर्गों में से एक वर्ग का वाचक है। मनुष्य या तो आर्य हो जाए, अन्यथा वह जन्म से दास तो होता ही है। दास अपना उप–क्षय या विनाश तो करता ही है, दूसरों का भी उप–क्षय ही करता है। इसके विपरीत, आर्य स्वयं बढ़ता है, और तो पंचायत है स्वयं में, पंचीकरण हुआ है उसके व्यक्तित्व में अग्नि–वायु–जल–पथ्वी–आकाश का। शब्द–स्पर्श–रूप–रस–गंध का परिणाम है वह, जैसे अन्य सब जड़–चेतन पिण्ड हैं। अतः जो भी स्वयं के स्वार्थवश अपने को दूसरों के हिताहित से निरपेक्ष समझता है वह तो दास है, स्वयं दुःखी रहने और अन्यों को दुःखी करने वाला। पर जो जानता है, अनुभव करता है, व्यवहार करता है कि उसमें सष्टि के सब तत्वों का, अणु–अणु का अंश है, वह सबसे निजता–आत्मीयता–प्रीति रखता है– यही आर्यत्व है।

दयानन्द ने आर्यत्व की खोज में अपने–पराए की गणना कभी नहीं की। सबको परख–परख कर शबरी के मीठे–मीठे बेर एकत्र किए थे। उन्होंने आग्रह कभी नहीं किया, जिद कभी नहीं की, 'मैं जो कहता हूँ वही ठीक है' की। 'सोचो, समझो, भूल सुधारो,– यह था दष्टिकोण उस दयानन्द का जिसने आर्य–समाज स्थापित की थी। सब देश, सब वर्ग उनके लिए समान रूप से उपदेश दया के पात्र थे। उनका संबोधन भूतल का अखिल मनुष्य समाज था। यह मनुष्य समाज गुण, कर्म, स्वभाव से आर्य समाज हो, दाससमाज नहीं, यह थी उनकी नानात्व में जो मूल तत्व को स्मरण रखता है, वह आर्य है।

दयानन्द 'विश्व को आर्य' करने वाले सोम–बिन्दुओं की धार को देखते थे और मनुष्यों को ऐसी सोमधारा प्रवाहित करने वाले बनाना चाहते थे। सोम की धारा से यज्ञ होता है। मनुष्य के जीवन से भी यज्ञ होना चाहिए। यज्ञ द्वारा मनुष्य देव बन जाता है। वेद की यही सार्थकता है, आत्मबोध की फलश्रुति यही है कि मनुष्य वेद से यज्ञ करते–करते ऋषि बने और फिर देव बन जाए। देव बनने पर हर मनुष्य का जीवन एक 'स्वर्ग' (सुख–धाम) हो जाएगा, जो कि यज्ञ का फल है। यज्ञ वही कर पाता है जिसे 'स्वर्–ग' की कामना हो। हर महामानव ने धरती पर स्वर्–ग उतारने की, धरती को स्वर्–ग बनाने के अरमान संजोए थे। इस धरती पर ईश्वर का– आर्य का राज्य हो, शैतान का– दास का नहीं। हर मनुष्य में निहित 'राम' प्रकट हो और धरती पर रामराज्य हो, रावणराज्य नहीं। किसी भी महामानव की शब्दावली को लें, बात एक ही है। दयानन्द ने इस भावना को 'आर्यसमाज' इस शब्द से व्यक्त किया था।

(२) आर्यसमाज का कल भूत का, इतिवत्त का विषय है। बहुत काम उसने किए हिन्दी–भाषी क्षेत्र में है। हिन्दीभाषियों में भी पंजाब, उत्तर प्रदेश के लोगों में प्रायः इसकी छाप है। आर्यसमाज एक फिरका बन कर रह गया है, हिन्दु समाज का। संस्कत और वेद से दूर होता जा रहा है। दयानन्द के नाम पर दुकान चल रही है। दयानन्द के अरमान हवा हो गए। दयानन्द के घोर तप की छवि बिगाड़ कर रख दी। आम आदमी की धारणा में आर्यसमाजी जिद्दी, झगड़ालू, सनकी किस्म का प्राणी है जो अपनी बात कठोरता, कटुता, आलोचना, दोषदर्शन के बिना नहीं कहता। तर्क और प्रमाण का स्थान मनमानी ने ले लिया है। आर्यसमाज की पत्रिकाओं में वेद नदारद है। वेद पर प्रवचन दुर्लभ हो गए हैं। न निजी चिन्तन है, न अभिनव चिन्तन है वेदमन्त्रों का।

विद्यालय, महाविद्यालय ईसाई, मुस्लिमों ने खोले और अपने मत का प्रचार किया। आर्यसमाज ने भी खोले पर वैदिकता और आर्यत्व का प्रचार नगण्य हो पाया। फलतः आर्य समाज शिक्षण–संस्थाएं, औषधालय, डिस्पेंसरी, अनाथालय, जैसी बातों में व्यस्त हो गया और जायदादें बनाने के लोभ में, रही सही मिशनरी भावना भी गंवा बैठा।

आने वाला कल कैसा होगा? स्पष्ट

अन्यों को भी बढ़ाता ही है। आर्य तो गति–प्रगति–उत्थान–उन्नति–विकास की साक्षात् मूर्ति होता है। जैसे चक्र के अरे चक्र की धुरी में जुड़े रहते हैं और चक्र का स्वरूप–निर्माण करते हैं वैसे, सं–गति, सं–वाद, सं–मनस्कता के साथ सबका मिलकर, गतिमान होना, यह आर्य का शील–स्वभाव होता है। चक्र का आविष्कार मनुष्य के आर्यत्व का एक महान् उद्भेदन था। उससे पूर्व, मनुष्य जमीन पर घिसटा–घिसटा कर अपना भोंड़ा वाहन चलाता रहा होगा। उसमें बड़ा श्रम, विपुल पसीना बहाना पड़ता था। इससे त्राण पाने के लिए चक्र की कल्पना उभरी। गोल–मटोल पत्थर को तीव्रता से लुढ़कते देखा होगा। चिन्तन में कोणकील रखने से जीवन को घसीटना पड़ता है। भावना को चक्राकार रखने से जीवन दौड़ता है। जीवन को सीधा–सपाट रखें और उसका आधार चक्र (समन्वित गति) हो तो, बस, आर्यत्व का उन्मेष हो गया। सूर्य, चन्द्र, नक्षत्रों की चक्र–गति प्रकति में स्पष्ट दीख रही है। जो चक्रवत् नहीं घूमता वह 'धूमकेतु' किस काम का? वह तो जहां पड़ेगा, जीवनलीला की प्रलय करेगा।

मनुष्य अकेला नहीं है। वह परिणाम है दो (शुक्र–शोणित) के रासायनिक मेल का। शुक्र–शोणित परिणाम है ओषधि–वनस्पति का जिसे भक्षण किया जाता है। ओषधि–वनस्पति परिणाम है पानी को। उपनिषद् को ऋषि पर्यावरण के 'यत् पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे' के रहस्य को जानते हुए कहते थे, पानी पुरुष कहलाते हैं, पुरुष बनकर बोलते हैं; 'आपः पुरुष–वचसो भवन्ति'। मनुष्य विराट् अभीप्सा।

दयानन्द का यह आर्यत्व–बोध, वैदिक शब्दावली में 'वेद' कहाता है। पोथी को 'वेद' इसलिए कहते हैं लक्षणा से, क्योंकि इसमें 'वेद' विषय का प्रतिपादन है। 'वेद' शब्द का अर्थ ही है बोध। बोध से अपने अजर–अमर आत्मस्वरूप का, अपनी औकात का, अपनी हैसियत का पता चलता है। और तब अपनी सत्ता, अपने बोध का चिरन्तन आनन्द आता है। सच्–चिद्–आनन्द, अपने इस स्वरूप के बोध को 'वेद' कहते हैं। जिसे यह वेद प्राप्त है वह आर्य है। इस बोध को प्राप्त ऋषि–यजमान यज्ञवेदि पर बिछी दर्भ घास की पत्ती को 'वेदोसि'–तू 'वेद'; है, इस प्रकार पुकारता है। घास की हर पत्ती में वेदतत्व विद्यमान है। देखने–सुनने वाला सष्टि के हर कण में, हर तरंग में वेद का दर्शन करता है। घास की पत्ती सच्–चिद्–'आनन्द है, सूर्य–चन्द्र–नक्षत्र सब सच्–चिद्–आनन्द के विलास हैं। यह बोध होने पर ही तो उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्' का शील उभरता है, तभी तो महात्मा की 'मनस्य् एकं, वचस्य् एकं, कर्मण्य् एकं' की कसौटी पर मनुष्य खरा उतरता है, तभी तो 'भूतों में आत्मा का, आत्मा में भूतों का दर्शन' हो पाता है।

दयानन्द का आर्य एक परिपूर्ण, संपूर्ण व्यक्तित्व है। दयानन्द का आर्य आर्य है, वेद है– इस धरती की अमूल्य संपत्ति है। आर्य होने के पश्चात् हिन्दु, मुस्लिम, ईसाई, यहूदी, पारसी– ये बिल्ले लगा भी लें तो कोई फर्क नहीं आता। दैनन्दिन जीवन प्रणाली में, रुचि भेद से वेश–भूषा, खान–पान, रीति–रिवाजों के भेद सदा रहे हैं, सदा रहेंगे। पर इस हैं। एक छाप है उसकी इस देश पर। आर्य, वेद, अष्टाध्यायी, महाभाष्य की चर्चा कोई करे तो, आम धारणा है कि, वह आर्य समाज का पक्षधर होना चाहिए। पर अनेक कामों की ओर आर्यसमाज ने पर्याप्त ध्यान नहीं दिया। दर्शनों में मीमांसा, वैदिक वांङ्मय में 'ब्राह्मण' ग्रन्थ, कर्मकाण्ड में श्रौत–स्मार्त यज्ञ विधि, संस्कत को लोकभाषा बनाना– ऐसे अनेक काम आर्य समाज ने छोड़ दिए। परिणामतः आर्यसमाज में यज्ञ के नाम पर घोर अज्ञान, और अज्ञानमूलक अशास्त्रीय यज्ञ विधियों की भरमार है। कोई न कोई कर्मकाण्ड 'अज्ञ कर्मसंगियों' को चाहिए। विग्रह पूजन को छोड़कर, आर्यसमाज ने यज्ञ को स्वीकार किया। पर जो यज्ञ विधि इसकी हैं वे मनमानी हैं, असंख्य हैं, ऊट–पटांग हैं। बुद्धिजीवी होने का अहं करने वाली वह संस्था कर्मकाण्ड के वैसे ही गर्त में जा गिरी है जैसे गत में विग्रह पूजन जा गिराता है। फलतः आर्यसमाज में पेशेवर याजकों की फौज बन गई है जो यज्ञ के नाम पर भोली जनता को बुद्धू बनाते हैं। पारायण एक भिन्न चीज़ है जिसे प्राचीन शब्दों में 'अध्ययन' कहते थे। यज्ञ एक भिन्न चीज है। दोनों को मिलाकर 'पारायण–यज्ञ' नामक एक अशास्त्रीय तरीका आर्यसमाज के पेशेवर याजकों ने ईजाद कर लिया। मार्क्स ने क्या गलत कहा था कि धर्म–रूपी अफीम समाज को मूर्च्छित किए हुए है।

आर्यसमाज का 'आज' एक उच्छृंखल, कट्टर, साम्प्रदायिक, अन्ध–मूढ़ संस्था का रूप है। संस्कत तो दूर, साहित्यिक हिन्दी तक आर्यसमाज के लोगों के लिए क्लिष्ट होती जा रही है। आर्यसमाज प्रधानतया है, यह गिरावट कहां जाकर रुकेगी, सोचने की, चिन्ता की बात है। दयानन्द भारत को अखिल मानव को वेद की ओर लौटाकर लाए थे। वेद संजीवनी बूटी थी मनुष्य के उद्धार की। आर्यधर्म, आर्य भाषा, आर्य देश की बात कहने वाले दयानन्द की भक्ति वेद की भक्ति का ही दूसरा नाम है। वेद संस्कत में हैं। संस्कत और वेद साधन हैं मनुष्य के उदात्त व्यक्तित्व को– आर्यत्व को उभारने के। अतः आर्यसमाज को संस्कत और वेद पर अपना फोकस फिर से रखना होगा। उसके अन्य सब काम दूसरों ने उठा लिए। अतः अब आर्यसमाज वे ही कार्य करे जो दूसरे नहीं कर रहे हैं।

प्रत्येक आर्यसमाज संस्कत, वेद और आत्मसाधना का केन्द्र बनना चाहिए। संस्कत मनुष्य की प्राचीनतम भाषा है, वेद मनुष्य की प्राचीनतम पोथी है। प्रदूषण से रहित वातावरण की चिन्ता का यह सांस्कतिक रूपांतर है कि हम संस्कत और वेद की ओर लौटें। इससे मनुष्यों का बौद्धिक प्रदूषण दूर होगा।

नियम है कि अभाव की पूर्ति देश–काल में कोई न कोई करता ही है। आर्य समाज के पथच्युत हो जाने से, संस्कत और वेद का, आत्मसाधना का बीड़ा अन्यों को उठाना पड़ा है, अन्य उठा भी रहे हैं। क्या आर्यसमाज इस श्रेय से भी वंचित होने को आमादा है। एक–एक करके, पुरानी पीढ़ी के वेदज्ञ जा रहे हैं, नए उभर नहीं रहे आर्यसमाज में कोई दर्शन शास्त्रों को पढ़ाने में रमा हुआ है, कोई व्याकरण घोट रहे हैं, पर वेद पर श्रम करने वाले कहां हैं? 'को वेदान् उद्ध–हरिष्यति?' ●

वैदिक ज्ञान द्वारा भ्रष्टाचार उन्मूलन

– ब्रिगेडियर चितरंजन सावंत

सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने वेद ज्ञान मनुष्य मात्र के लिए दिया। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद चार ऋषियों के हृदय में प्रकाशित किया है। क्रमशः अग्नि, वायु, आदित्य और आंगिरा। अनेकों देशों में वेद ज्ञान का प्रचार हुआ किन्तु समय बीतने के साथ–साथ अन्य लोगों ने स्थानीय कहानियाँ, मंत्रों पर थोप दी और अंधविश्वास बढाने लगे। इस कारण वेद पढ़ने वाले आर्यो की संख्या कम होने लगी और अनार्यता बढ़ने लगी। दुरित बढ़ने लगा, भद्र का लोप होने लगा। शताब्दियों का अंधकार छाया रहा और राक्षस राज करते रहे हैं। प्रकाश के अभाव में न देवता प्रगति कर सके, न मनुष्य। मनुर्भव के लक्ष्य का लोप होने लगा।

कई शताब्दियों बाद आशा की एक किरण अंधेरी सुरंग के उस पार दिखाई दी। टंकारा में सन् 1824 में बालक मूलशंकर का जन्म हुआ। उन्होंने वैदिक विधान बनाने का बीड़ा उठाया और विश्व को आर्य बनाने का संकल्प लिया। मानव मात्र को वेद रूपी अमृत पिलाने के लिए घर बार छोडकर निकल पड़े। कहीं सफलता मिली, तो कहीं नहीं मिली। राक्षसी षड्यन्त्र में उन्हें विषपान कराया और सन् 1883 में दीवाली की शाम उनका जीवन दीप बुझ गया। किन्तु असंख्य अन्य दीपों को प्रज्ज्वलित कर गया। राक्षसों को फिर से देवता बनाने का अभियान चला और अनेक दस्यु बने आर्य।

आज एक विकराल समस्या हमारे सामने है, जिससे आप हम सभी जूझ रहे हैं, समस्या भ्रष्टाचार रूपी राक्षस की। आज हम विचार कर रहे हैं कि क्या वैदिक विधान द्वारा इस राक्षस को सदा के लिए सुला सकते

पैसे द्वारा ही सत्ता सुख जिन्हें मिला है – वो उस सुख से वंचित होना नहीं चाहते और पैसा लगाकर और सत्ता ढूंढ़ रहे हैं और सत्ता के पाने के बाद अधिक से अधिक पैसे को ढूंढ़ रहे हैं। इसी कुचक्र में फंसने के बाद उन्हें जीवन मूल्यों से क्या मतलब। देश का धन विदेशी बैंकों में जमा करना, भ्रष्टाचार की पराकाष्ठा है। जो व्यक्ति इस पर आपत्ति कर सकते हैं वे मौन हैं – कोई धृतराष्ट्र समान पुत्र मोह से मौन है तो कोई सरकार के प्रति वफादार करके अपने हाथ कटा बैठा है। इसीलिए, भ्रष्टाचार पनप रहा है। राजकोष से मुद्रा निजी उपयोग के लिए वो लोग निकाल रहे हैं, जिन्हें राजकोष की रक्षा करने का दायित्व दिया गया है। समय के साथ प्रजा निर्बल हो रही है, और राजधर्म कहता है कि यदि प्रजा निर्बल हो रही है तो राज सबल नहीं हो सकता। देश भी पतन की राह पर है। हम धर्म की दुहाई देते हैं किन्तु धर्म का पालन नहीं करते। बड़े–बड़े लोग, ऐसी अनैतिक बातों में लिप्त हैं कि वे दूसरों को सीख नहीं दे सकते। यथा राजा तथा प्रजा। आर्थिक स्थिति और बेहतर बनाने के दावे के कुचक्र में फंस कर शासक भ्रष्टाचार के दलदल में और फंसते जा रहे हैं – निकलने का मार्ग किसी को पता नहीं। मंत्री और संतरी दोनों ही लुटेरों की भूमिका में राजनीति के रंगमंच पर अपमानित खड़े हैं किन्तु वो अपने आपको और एक दूसरे को सम्मानित करने में जुटे हैं।

विधि विधान पालन : शताब्दियों से यह कहा जा रहा है कि विधि विधान महिमामय है। कोई व्यक्ति कितना ही महिमा मंडित क्यों न हो, यह विधान से ऊपर समाधान क्रांतिकारी होता है। अभी तक हम और आप शारीरिक सुख में अपने को सुखी मान रहे हैं। यह भ्रम है। यदि व्यक्ति और समाज आध्यात्मिक शक्ति को जागृत नहीं करता तो वो मूर्छित अवस्था में रहेगा कि उसे ढोल और नंगाड़े भी जगा नहीं सकते। लेकिन हम और आप जो आर्य समाज के लोग हैं वही तो सोते हुए देश को जगाने आए हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में स्वामी दयानन्द ने जगाया – 21वीं शताब्दी में हम और आप दयानन्द के सैनिक देश को जगाने के लिए कटिबद्ध हैं। इसके लिए हमें सार्वजनिक अभियान चलाना है। पहले तो व्यक्ति अपने आपको आध्यात्मिक शक्ति सम्पन्न होकर कठिनाईयों से जूझने का संकल्प ले और फिर अनेक व्यक्ति मिलकर पूरे समाज को आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाएँ और ऊपर उठाएँ।

आज आवश्यकता है कि अनेक व्यक्ति मिलकर पूरे समाज को आध्यात्मिक शक्ति के माध्यम से सबल बनाएं। सोने वालों को जगाएं और संगठन द्वारा नवीन जीवन का संचार करें। संघ शक्ति संगठन ही अमृत है। आईये हम और आप मिलकर आध्यात्मिक शक्ति और संगठन रूपी बल का अमृत पान करें और भ्रष्टाचार रूपी भयानक राक्षस का अंतिम संस्कार करें।

याद रखिए – वैदिक विधान में कर्म और कर्म फल का महत्त्व है। हम अच्छे कर्म करेंगे तो फल अच्छा होगा। यदि हम बबूल का पेड़ बोते रहे तो फिर आम कहाँ से खा सकते हैं। इसलिए आज आवश्यकता इस बात की है कि आत्मा अनुशासन, आध्यात्मिक शक्ति और स्वच्छ जीवन से जन–जन को प्रेरणा देते हुए देश

हैं – वैसे ही जैसे राम ने रावण को और कृष्ण ने कंस को चिर निद्रा दी। हम सभी का विचार है कि यह किया जा सकता है। एक बार फिर हम दुरित को दूर करेंगे और भद्र को गले लगायेंगे। प्रश्न है कैसे।

भ्रष्ट आचरण का मूल कारण है, और अधिक धन, स्वर्ण की चमक में, धन की चकाचौंध में सब अपनी आंखों की रोशनी खो रहे हैं अच्छे और बुरे में भेद नहीं कर पा रहे हैं। नैतिकता को ताक पर रख दिया है।

स्वामी आर्यवेश जी दक्षिण अफ्रीका की वेद प्रचार यात्रा पर

आर्य समाज की वैदिक विचारधारा को लेकर सार्वदेशिक सभा संचालन समिति के संयोजक स्वामी आर्यवेश जी अपने सहयोगी ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र आर्य के साथ 10 अप्रैल को दक्षिण अफ्रीका वेद प्रचार के लिए प्रस्थान कर रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका में पिछले वर्ष के ओजस्वी प्रवचनों से प्रभावित होकर इस बार पुनः उन्हें सादर आमन्त्रित किया गया है और 10 अप्रैल से लेकर 10 मई, 2013 तक दक्षिण अफ्रीका के डरबन से लेकर जोहानिसबर्ग, पीटरमारिसबुर्ग के समस्त स्थानों एवं विश्वविद्यालयों में भव्य कार्यक्रमों का आयोजन किया है। जिसका संयोजन आर्यन बेनीवोलेन्ड को तथा आर्य युवक सभा दक्षिण अफ्रीका के सी. ई. ओ. श्री राजेश लक्ष्मण करेंगे। इस अवसर पर पिछले वर्ष आरम्भ हुए दक्षिण अफ्रीका में आर्य समाज के 100 वर्ष के शताब्दी समारोह के कार्यक्रम का समापन होगा और अगले 100 वर्षों के लिए समस्त अफ्रीका में वैदिक ज्योति जलाने का संकल्प लिया जायेगा।

नहीं हो सकता। दुर्भाग्य है कि आज अनेक बड़े–बड़े मंत्री जो कानून के पंडित हैं वो अपने शब्दों और कर्मों से कानून की धज्जियाँ उड़ा रहे हैं। क्या ऐसे लोग भ्रष्टाचार पर लगाम लगा सकते हैं?

देश को और राज्य को सबल बनाने के लिए, कानून का उल्लंघन करने वालों को दंड देना आवश्यक होता है। यदि चोर डाकू और कातिलों को मंच पर महिमा मंडित किया जाता है तो उन्हें दण्ड देने का साहस किसे हो सकता है। यदि देश की मर्यादा का मर्दन किया जाता है तो देश नाश को प्राप्त होता है। यदि सामान्य जन निर्बल होते जायेंगे तो जैसा पहले कहा – शासक वर्ग सबल नहीं हो सकता। यदि सभी जन निर्बल हैं तो क्या देश सबल हो सकता है।

भ्रष्टाचार रोग है – भयानक रोग है – राज योग है। भ्रष्टाचार रूपी दीमक देश को अंदर ही अंदर चाट कर खोखला कर रहा है। और खोखला राष्ट्र असमय ही काल के गाल में समा सकता है। देश के शत्रु श्रृंगाल समान उसी घड़ी की प्रतीक्षा में चहुँ ओर बैठे हैं।

क्रांतिकारी समाधान – हर गंभीर समय का को पुनः सन्मार्ग पर चलाएँ। इसी में हमारा, आपका, देश का और मानव मात्र की भलाई है।

–पता – वी. एस. एम. उपवन, 609, सैक्टर–29, अरूण विहार, नोएडा–201303

'वैदिक सार्वदेशिक' पत्र के स्वामित्व आदि सम्बन्धी विवरण

फार्म 4 नियम 8

(प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक एक्ट)

प्रकाशन का स्थान	: दयानन्द भवन, ३/५, आसफ अली रोड, (रामलीला मैदान), नई दिल्ली–०२
प्रकाशन की अवधि	: साप्ताहिक
प्रकाशन का समय	: प्रति बहस्पतिवार
मुद्रक का नाम	: प्रो० कैलाशनाथ सिंह
क्या भारत का नागरिक है	: हां
मुद्रक का पता	: सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, ३/५, आसफ अली रोड (रामलीला मैदान), नई दिल्ली–११०००२
सम्पादक का नाम	: प्रो० कैलाशनाथ सिंह
क्या भारत का नागरिक है	: हां
सम्पादक का पता	: पूर्ववत्
उन व्यक्तियों के नाम-पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के १ प्रतिशत से अधिक के साझेदार/हिस्सेदार हों	:

मैं प्रो० कैलाशनाथ सिंह इस लेख पत्र के द्वारा घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त विवरण, जहां तक मेरा ज्ञान और विश्वास है, सही है।

प्रो० कैलाशनाथ सिंह, सम्पादक, प्रकाशक व मुद्रक

13 अप्रैल पर विशेष

अमृतसर की खूनी बैसाखी से क्षुब्ध हुए अमर शहीदों का बलिदान

- रामबिहारी विश्वकर्मा

अंग्रेज हमारे देश में व्यापारी के रूप में आये और भारत की जनता ने 'अतिथि देवो भव' की परम्परा के अनुसार इन व्यापारियों को सब प्रकार की सुविधाएं दीं। लेकिन धीरे-धीरे इन व्यापारियों ने देश में फूट डालकर उसके टुकड़े-टुकड़े करके अपना कब्जा जमा लिया। 1857 में भारतीय सिपाहियों ने पहली बार विद्रोह करके भारत माँ को विदेशी दासता से मुक्ति दिलाने का प्रयास किया लेकिन वे विफल रहे। महाराष्ट्र में वासुदेव बलवन्त फड़के ने 1873 में युवा समाज का संगठन शुरू किया। जगह-जगह व्यायामशालाएं खोलीं। इस क्रान्तिकारी को राजद्रोह के आरोप में आजीवन कारावास की सजा दी गई लेकिन युवकों ने खासतौर पर गरमपंथी विचारधारा वाले युवकों ने यह निश्चय कर लिया कि इस देश को आजादी भीख मांगने से नहीं मिलेगी। उनका दृढ़ विचार था कि स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे हम लेकर रहेंगे।

भारत में अंग्रेजों ने तथाकथित शासन सुधार लाने के लिए लार्ड साइमन की अध्यक्षता में एक कमीशन नियुक्त किया था। यह कमीशन 3 फरवरी, 1928 को जब भारत पहुंचा तो पूरे देश में हड़ताल रखी गई। और जगह-जगह ''साईमन गो बैक'' के नारे लगाये गये। लाहौर में नौजवान भारत सभा के सदस्यों ने भी नारे लगाने की योजना बनाई। तत्कालीन पुलिस अधीक्षक स्काट ने असिस्टेंट सान्डर्स को रास्ता साफ करने की जिम्मेदारी सौंपी। लाहौर में लाला लाजपतराय और नौजवानों की टोली पर सान्डर्स ने लाठी बरसायी। लाला लाजपतराय को इतनी चोट लगी कि कुछ दिनों पश्चात् चोट के कारण उनकी मृत्यु हो गई। भगतसिंह ने इस दुखद घटना पर जमीन में गाड़ रहे थे तो उनके पिता सरदार किशन सिंह ने पूछा कि बेटे तुम क्या कर रहे हो तो तुतलाती आवाज में भगत सिंह ने कहा कि बुबुकें बो रहा हूँ। यानि बंदूके बो रहा हूँ। उनका परिवार पिछली दो पीढ़ियों से विदेशी सरकार के खिलाफ संघर्ष कर रहा था। ऐसे परिवार में भगतसिंह जैसे क्रान्तिकारी विचारों वाले बालक का जन्म लेना स्वाभाविक ही था। भगत सिंह 10-11 साल की उम्र में ही बहुत ही चिन्तनशील हो गये थे। वह धर्म के गहन विषयों की आलोचना करने में सक्षम हो गये थे। 1919 में 13 अप्रैल को बैसाखी के दिन अमृसर क जलियांवाला बाग में एक सभा में करीब 20 हजार स्त्री-पुरुष, बच्चे इकट्ठे हुए थे। इसी बीच लैफ्टिनेंट सर ओडायर ने 100 हिन्दुस्तानी और 40 अंग्रेज सिपाहियों के साथ वहां प्रवेश किया। करीब 16 सौ राउण्ड फायर किये गये, जलियांवाला बाग में लाशें पट गईं। उस समय भगतसिंह 12 वर्ष के थे। वह पढ़ने गये थे, लेकिन वह दृश्य देखकर उन्होंने खून से भीगी मिट्टी उठाई और माथे से लगाकर उसे एक छोटी सी शीशी में भर लिया। घर पहुंचने पर अपनी बहन को वह शीशी दिखाई और शीशी के चारों ओर फूल रखकर सिर झुकाया। 14 वर्ष की उम्र में ही उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और स्वतंत्रता के आन्दोलन में कूद पड़े। उनके अन्दर अद्‌भुत संगठन शक्ति तो थी ही, व्यवहार कुशल भीथे। इसी बीच 5 फरवरी 1922 को गोरखपुर के चौरी चौरा स्थान पर लोगों की भीड़ ने थानेदार और सिपाहियों को थाने में बन्द करके आग लगा दी। क्रान्तिकारियों के मन में यह निश्चय हो गया कि नारा गूंजा 'साम्राज्यवाद का नाश हो।' भगत सिंह केवल क्रान्तिकारी ही नहीं थे वे अध्ययनशील और दार्शनिक विचारों वाले व्यक्ति थे। उनसे जब न्यायालय में पूछा गया कि क्रान्ति से आपका आशय क्या है तो उन्होंने कहा, क्रान्ति से हमारा प्रयोजन है अन्याय पर आधारित वर्तमान व्यवस्था में परिवर्तन। उन्होंने आगे कहा, पूंजीपति, शोषक और समाज पर घुन की तरह जीने वाले लोग करोड़ों रुपया पानी की तरह बहाते हैं। वहीं दूसरी ओर शानदार महलों का निर्माण करने वाले लोग गन्दी बस्तियों में रहते हैं ऐसा समाज किस काम का? इसे बदलना होगा। भगत सिंह ने न्यायालय के समझ नई सामाजिक व्यवस्था की जो रूपरेखा दी वह बड़े-बड़े दार्शनिकों को भी सोचने के लिए बाध्य करती है कि इतनी कम उम्र में इस व्यक्ति ने गहन चिन्तन-मनन का समय भला कब निकाला होगा?

असेम्बली में विस्फोट के मूल में उद्देश्य अपने क्रान्तिकारी विचारों को लोगों तक पहुंचाना था। उनके वक्तव्य उस समय के प्रचलित अखबारों में प्रकाशित हुए, उनकी नई विचार पद्धति के साथ जोशीली भाषा और कष्ट झेलने के लिए आगे बढ़ना यह देखकर सारा देश उनके प्रति आकृष्ट हुआ। उन्होंने कहा था कि हम ये जानते हैं कि पिस्तौल और बम इन्कलाब नहीं लाते। इन्कलाब की तलवार विचारों की सान पर तेज होती है, हमने बम का धमाका करके यही प्रकट करना चाहा है। हमारे इन्कलाब का अर्थ पूंजीवाद और पूंजीवादी युद्धों के कष्टों को समाप्त करना है। उन्होंने न्यायाधीश के सामने स्पष्ट किया कि अगर बम फेंकने वालों का सही दिमाग न होता तो खुद ही फैसला दिया। फैसले में भगतसिंह, राजगुरू और सुखदेव को फांसी की सजा सुनाई गई, 7 को कालेपानी की सजा, एक को सात वर्ष की सजा और एक को तीन वर्ष की सजा दी गई। भगत सिंह को मृत्यु से तनिक भी भय न था, उन्हें न तो व्यक्तिगत चिन्ता थी और न कोई दुःख था।

भगतसिंह जेल में अध्ययन करते रहते थे। हर पत्र में वे पुस्तकों को ही मांग करते थे। पुस्तकों के साथ-साथ वह यहां तक लिख देते थे, कि पुस्तकालय के रजिस्टर में उस पुस्तक का कितना नम्बर है। उन्होंने चार्ल्स डिकेन्स, रीड मेम्सबेनी, गोर्की, मार्क्स, उमर खैयाम, आस्कर वाइल्ड, जार्ज बनार्ड शा और लेनिन आदि का गहन अध्ययन किया था। जब वे अपनी कोठरी में इधर से उधर घूमते थे तो कभी-कभी पुस्तकें छोड़कर मधुर स्वर में गा उठते थे, ''माँ मेरा रंग दे बसन्ती चोला। इसी रंग में रंग के शिवा ने माँ का बंधन खोला।'' उन्हें राष्ट्र और राष्ट्रवासियों की इतनी चिन्ता थी कि उसके सामने अपने कष्टों का कुछ ध्यान ही नहीं था, जेल में ही उन्होंने 'आत्मकथा', मौत के दरवाजे पर, समाजवाद का आदर्श और स्वाधीनता की लड़ाई में पंजाब का पहला उभार जैसी पुस्तकें लिखीं। कुछ पुस्तकें तो छप गईं लेकिन कुछ नहीं छप पाई। जेल में जब कोई मिलने आता था तो कभी-कभी वह कहते थे अगर मैं इन्कलाब जिन्दाबाद का नारा देश के कोने-कोने तक पहुंचा सका तो समझूंगा कि मेरे जीवन का मूल्य मिल गया। उन्होंने जेल से युवकों के नाम सन्देश भेजा था जिसमें अपनी राजनीतिक विचारधारा को स्पष्ट किया था। उन्होंने अपने बारे में कहा था, यह बात प्रसिद्ध की गई है कि मैं

प्रस्ताव रखा कि लाला जी पर जो लाठियां बरसाई गयी हैं। उसी के कारण उनकी मृत्यु हुई है। इससे समूचे राष्ट्र का अपमान हुआ है। और नौजवान भारत सभा इस अपमान का बदला लेकर रहेगी। उन्होंने लाठी चलाने वाले पुलिस सुपरिटेंडेंट स्काट को गोली का निशाना बनाने का निश्चय किया। लाला लाजपतराय की मृत्यु के एक महीने के बाद चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राजगुरू और जयगोपाल ने पुलिस स्टेशन के सामने सान्डर्स को गोलियों से भून डाला। वे मारना तो चाहते थे स्काट को जिसने सान्डर्स को लाठी चार्ज का आदेश दिया था। लेकिन दोनों का आकार-प्रकार ऐसा था कि पहचानने में कुछ भूल हो गई और भ्रमवश उन्होंने सान्डर्स को मार डाला। इस तरह उन्होंने लाला लाजपतराय की मृत्यु का बदला ले लिया। इन जवानों ने भारत माँ की बेड़ियां काटने के लिए अपने पैरों में बेड़ियाँ डाल लीं।

23 वर्ष की उम्र में भगत सिंह एक युगपुरुष बन गये थे। अपने खून से उन्होंने स्वतन्त्रता के जिस पौध कोसींचा वह विशाल वृक्ष बन गया। भगत सिंह को वीरता का यह सबक पुश्तैनी तौर पर प्राप्त हुआ था। एक बार जब वे छोटे थे और छोटे-छोटे तिनके

अंग्रेजों के कान बहरे हो चुके हैं। वे शान्ति की भाषा सुन नहीं पाते। बहरों को सुनाने के लिए ऊंची आवाज की जरूरत होती है इसीलिए उन्होंने अंग्रेजों का ध्यान आकर्षित करने के लिए और उनके बहरे कानों में सुनाई देने लायक आवाज बुलन्द करने का निश्चय किया। उन्होंने एसेम्बली में बम फेंकने की योजना बनाई। एसेम्बली में 8 अप्रैल 1929 को वायसराय के फैसले की घोषणा की जाने वाली थी। भगतसिंह और बटूकेश्वर दत्त खाकी कमीज और नेकर पहनकर वहां पहुंच गये। उन्होंने अखबार में लिपटा हुआ बम सरकारी बेंचों के पीछे खाली जगह पर फेंक दिया। उसके बाद दूसरा बम भी फेंका। उन्होंने पिस्तौल से दो गोलियां भी छोड़ी। दोनों वहां खड़े रहे और नारा लगाया इन्कलाब जिन्दाबाद दूसरा नारा गूंजा साम्राज्यवाद का नाश हो। उन्होंने एसेम्बली में पर्चे भी फेंके जिस पर अंग्रेजी में लिखा हुआ था, बहरों को सुनाने के लिए ऊँची आवाज की जरूरत होती है। बम फेंकने के बाद भगत सिंह तथा बटूकेश्वर दत्त आसानी से भाग कर बच सकते थे मगर वे शांत चुपचाप खड़े रहे। पुलिस जब उन्हें कोतवाली ले जाने लगी तो उन्होंने फिर नारा लगाया, 'इन्कलाब जिन्दाबाद' दूसरा

स्वामी अग्निवेश जी
5 दिवसीय ईरान और ईराक की यात्रा पर

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रखर विचारधारा के लिए माने–जाने वाले स्वामी अग्निवेश जी को ईरान और ईराक में 5 दिन की यात्रा के लिए आमन्त्रित किया गया है। स्वामी अग्निवेश जी 7 अप्रैल को दिल्ली से रवाना होकर ईरान की राजधानी तेहरान उसके बाद ईराक की राजधानी बगदाद, ईराक के प्रमुख शहर नज़फ और कर्बला की यात्रा करेंगे। इस अवसर पर दोनों देशों के प्रमुख धार्मिक विद्वानों के साथ तथा सामाजिक एवं राजनीतिक अधिकारियों के साथ हिंसामुक्त समाज बनाने की दिशा में विषद् चर्चा होगी। इसका आयोजन ईराक सरकार के तत्वावधान में अलहिकमा सोसाइटी और इस्लामिक कल्चर द्वारा किया जा रहा है।

आज से 5 वर्ष पहले स्वामी जी को ईरान की सरकार ने राष्ट्रीय अतिथि बनाकर ईरान के प्रसिद्ध शहर इस्फ़हान में अन्तर्राष्ट्रीय धर्म सम्मेलन में आमन्त्रित किया था। इसके बाद ईरान के प्रसिद्ध धर्म शिक्षा नगरी कुम के ऐतिहासिक मदरसों में विशेष रूप से बुलाया गया था। उस समय हुई चर्चा से प्रभावित होकर पुनः उन्हें दुबारा कुम के मदरसों में वैदिक और इस्लामिक मान्यताओं के ऊपर चर्चा के लिए बुलाया गया है।

वे खाली जगहों की बजाय बेंचों पर बम फेंकते, लेकिन उन्होंने सही जगह चुनने की जो हिम्मत दिखाई है, उसके लिए उन्हें ईनाम मिलना चाहिए। 12 जून 1921 को हुए असेम्बली बम कांड के मुकदमें में भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त को आजीवन कारावास दिया गया। भगत सिंह जेल से ही अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए जनक्रान्ति करते रहे।

लम्बी भूख हड़ताल की। भगतसिंह ने कहा कि हम इस शर्त पर भूख हड़ताल तोड़ेंगे कि हम सबको एक साथ रहने का मौका दिया जाये। जेल अधि ाकारियों ने उनकी बात मान ली और उन्हें दाल और फुल्का दिया गया। उस समय भी उन्होंने अपनी जिद मनवाई। आजादी के इन दीवानों को देखने के लिए देश भर से लोग पेशी के दिन अदालत में जाते थे और वहां 'वन्देमातरम्' और 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारों से आसमान गूंज उठता था।

लाहौर जेल में ही बटुकेश्वर दत्त, अजय घोष, जितेन्द्र सान्याल, यतीन्द्र नाथ दास भी रखे गये थे। इसी बीच सान्डर्स हत्याकाण्ड का मुकदमा भी 10 जुलाई 1929 से शुरू हुआ। भगत सिंह को हथकड़ी लगाने की जब बात हुई तो उन्होंने कहा कि एक क्रान्तिकारी को पुलिस के सिपाही के साथ हाथ बांध कर ले जाया जाये ये न्याय के खिलाफ है और उन्होंने भूख हड़ताल कर दी। न्यायाधीश जब कुर्सी पर बैठते थे तो चारों ओर नारे और राष्ट्रीय गीत गूंजने लगता था, **''सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है। देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है। वक्त आने पर बता देंगे तुझे ऐ आसमां। हम अभी से क्या बताएं क्या हमारे दिल में है''।**

जिस समय मृत्यु की भयानक काली छाया मंडरा रही थी, उस समय भी आजादी के इन दीवानों की हंसी और अट्हास गूंजता रहता था। भगत सिंह कई बार ऐसा व्यंग्य छेड़ते थे या कोई ऐसा पेंचीदा सवाल उठा देते थे कि मजिस्ट्रेट भी चकरा जाते थे। मुकदमें की कार्यवाही 3 महीने तक चलती रही और दुनिया भर के मुकदमों के इतिहास में शायद लाहौर षड्यन्त्र केस ही ऐसा है जिसमें फैसला उस दिन सुनाया गया जिस दिन न अभियुक्त अदालत में हाजिर थे, न गवाह और न वकील। अदालत ने खुद आरोप लगाया और

आतंकवादी हूँ परन्तु मैं आतंकवादी नहीं हूँ, मैं एक क्रान्तिकारी हूँ जिसके कुछ निश्चित विचार-आदर्श और लम्बा कार्यक्रम है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि हम बम और पिस्तौल से कोई लाभ प्राप्त नहीं कर सकते। हमारा मुख्य लक्ष्य यह है कि मजदूरों और किसानों का संगठन हो।'' भगतसिंह के बलिदान का क्षण ज्यों-ज्यों नजदीक आ रहा था, वह प्रसन्नता और उत्सुकता के साथ उस क्षण की प्रतीक्षा कर रहे थे। अपने छोटे भाई कुलतार सिंह को लिखे पत्र में उन्होंने कहा था- ''फिर जन्म लूँ और मातृभूमि की और सेवा कर सकूँ'' मृत्यु के प्रति उनकी निर्भीकता को देखकर लगता था कि जैसे वह इन्सान नहीं फरिश्ता है। जब उनसे कहा गया कि आखिरी वक्त अपने वाहे गुरु का नाम ले लो और 'गुरुवाणी' का पाठ कर लो तो भगतसिंह ने कहा, ''आखिरी वक्त आ गया है, मैं परमात्मा को याद करूँ तो वह कहेंगे कि यह बुजदिल है, तमाम उम्र तो इसने मुझे याद नहीं किया और मौत सामने नजर आने लगी है तो मुझे याद करने लगा है। लोग यही कहेंगे कि आखिरी वक्त मौत को सामने देखकर इसके पांव लड़खड़ाने लगे।'' जब फांसी की सजा दी गई तो भगतसिंह बीच में थे, अगल-बगल सुखदेव और राजगुरु थे। तीनों मिलकर साथ-साथ गाते हुए चलने लगे, दिल से निकलेगी ना मर कर भी वतन की उल्फत, मेरी मिट्टी से भी खुशबुए वतन आयेगी।

भगत सिंह ने मजिस्ट्रेट को देखकर कहा था 'आप बहुत भाग्यशाली हैं कि आपको यह देखने को नसीब हो रहा है कि भारत के क्रान्तिकारी किस तरह खुशी-खुशी अपने उच्च आदर्शों के लिए मौत को गले लगाते हैं।' उनके पैरों पर न कंपकंपी थी, न चेहरे पर घबराहट। फांसी की फंदा पकड़कर उसे चूम कर तीनों ने एक साथ गर्जना की, ''इन्कलाब जिन्दाबाद'' साम्राज्यवाद मुर्दाबाद। उस समय शाम के सात बजकर 30 मिनट थे। इन तीनों क्रान्तिकारियों को समूचा देश उनकी निर्भीकता और राष्ट्रवाद की अदम्य भावना के लिए सदैव याद रखेगा। ●

(पूर्व निदेशक, आकाशवाणी केन्द्र,

नई दिल्ली)

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा और डी. ए. वी. प्रबन्ध समिति द्वारा
श्री विश्वनाथ जी 'आजीवन उपलब्धि सम्मान' से विभूषित

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा एवं आर्य युवा समाज दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में 18 फरवरी, 2013 को हंसराज मॉडल स्कूल, पंजाबी बाग, नई दिल्ली के प्रांगण में स्वामी दयानन्द जी के जन्मोत्सव पर आयोजित एक विशाल कार्यक्रम 'उत्थान–पर्व' में श्री विश्वनाथ जी को प्रकाशन के क्षेत्र में विश्वस्तरीय मानदण्ड स्थापित करने, पुस्तक जगत में एक नई क्रान्ति का सूत्रपात करने, शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान देने, पूरे भारतवर्ष में डी. ए. वी. संस्थाओं के संचालन एवं आर्य समाज के उत्कर्ष एवं उत्थान हेतु उनके द्वारा की गई विशिष्ट सेवाओं के लिए आजीवन उपलब्धि सम्मान से विभूषित किया गया। इस आयोजन के मुख्य अतिथि श्री पूनम सूरी, प्रधान, डी. ए. वी. प्रबन्धक समिति और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने विश्वनाथ जी को शॉल ओढ़ाकर, स्मृति–चिन्ह और प्रशस्ति पत्र देकर यह सम्मान दिया।

पुरस्कार प्रदान करते हुए श्री पूनम सूरी (दाएं), प्रधान, डी. ए. वी. प्रबन्धक समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री विश्वनाथ जी (मध्य में) और श्री प्रबोध महाजन, (बाएं)

इससे पूर्व मुख्य अतिथि श्री पूनम सूरी जी ने अपने वक्तव्य में श्री विश्वनाथ जी की सेवाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज, डी. ए. वी., साहित्य और समाज सेवा को समर्पित किया है। आर्य समाजी परिवार में पले–बढ़े श्री विश्वनाथ जी तीन दशक से अधिक समय से डी. ए. वी. प्रबन्धक समिति के उपप्रधान रहे हैं। उन्होंने आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान और संरक्षक पदों पर कार्य करते हुए सभा के कार्यों को अपना मार्गदर्शन प्रदान किया। श्री पूनम जी ने आगे कहा कि श्री विश्वनाथ जी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में डी. ए. वी. प्रकाशन विभाग ने देश–विदेश में अपनी विशेष पहचान बनाई है। चारों वेदों के सम्पूर्ण हिन्दी और अंग्रेजी भाष्यों का प्रकाशन उनका ऐतिहासिक कार्य है। वे वर्षों तक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र 'आर्य जगत्' के सम्पादक रहे और आज भी 'आर्यन हैरिटेज' का निष्ठापूर्वक संपादन कर रहे हैं। मुख्य अतिथि ने श्री विश्वनाथ जी की काव्य रचनाओं का जिक्र किया और इन श्रेष्ठ रचनाओं में से एक रचना को पढ़कर भी सुनाया। उन्होंने श्री विश्नाथ जी की दीर्घायु की कामना की।

इस पर्व पर स्वामी दयानन्द के जीवन का उल्लेख करते हुए प्रधान जी ने कहा, स्वामी जी ने वैदिक चिन्तन की परम्परा को पुनर्जीवित करते हुए भारतीय गौरव की पुनर्स्थापना की। आज एक और दयानन्द की आवश्यकता है। उन्होंने कहा आज शिक्षा को नया आयाम देने की आवश्यकता है। साधन से ज्यादा साधना की आवश्यकता है।

श्री विश्नाथ जी ने अपने संबोधन में इस सम्मान के लिए अपना हार्दिक आभार व्यक्त किया और अपनी समस्त सेवाओं को आर्य समाज और डी. ए. वी. के प्रति गुरु–दक्षिणा की संज्ञा दी। 93 वर्ष की आयु वाले इस महान व्यक्तित्व ने लगभग आधा घण्टा अपने जीवन की इस अवधि के उन सारे पृष्ठों को खोला और डी. ए. वी. तथा आर्य समाज के आरंभिक वर्षों को स्वर्ण युग की संज्ञा देते हुए, डी. ए. वी. स्कूल और

हे दिव्य सूर्यसम आर्य समाज!

— प्रियवीर हेमाइना

हे आर्य समाज! आर्यसमाज! हे दिव्य सूर्यसम आर्य समाज।
हे वैदिक संस्कृति के साज। तूने किये महान् ही काज।।
थर्राते तेरे सिद्धान्तों से, टोनेबाज व धोखेबाज।
मैं इसीलिए तो कहता हूँ, तू ही है समाज अधिराज।।
तू है रक्षक कन्याओं का, तू है रक्षक अबलाओं का।
कन्याओं हेतु आर्य समाज, किया अत्र शिक्षा का राज।।
हिन्दी भाषा को तूने ही, संज्ञा दी आर्यभाषा की।
जो प्रतिष्ठित है देश में आज, पहने राष्ट्रभाषा का ताज।।
तूने दिये हिन्दी के वक्ता, प्रकाशवीर जैसे प्रवक्ता।
भाषण की अनुपम आवाज, कहाँ सुनेंगे सर्वजन आज?।।
अर्पित हैं तेरे सब ही काज, सर्वजन–हिताय आर्य समाज।
कहूँ क्या तुझे धर्मसमाज? हे आर्य समाज! आर्य समाज।।
''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' का, काज है तेरा महासुकाज।
इसी से तो होगा पुनः यहाँ, आर्यों का चक्रवर्ती राज।।
''विश्वमार्यम् कृण्वन्तो'' दाता, वेदों का सुन्दर उद्गाता।
सबकी आशाओं का समाज, तू ही तो है हे आर्य समाज।।
है तेरा लक्ष्य विश्वोपकार, है तेरा लक्ष्य वेद प्रचार।
बनें इक नगर–सा विश्व समाज, यत्न करता तू आर्य समाज।।
तूने दिये दिव्य क्रान्तिवीर, भगत, बिस्मिल से वे आर्यवीर।
हैं जो लाए स्वभारतराज, हे आर्य समाज! आर्यसमाज।।
''वेद का पढ़ना परम धर्म, वेद का सुनना आर्य धर्म''।
है कह रहा तू आर्य समाज, सत्य सनातन आर्य समाज।।

कॉलेज में हुई अपनी शिक्षा और नींव के पत्थर बने तत्कालीन समर्पित विद्वान् अध्यापकों से अपने सम्पर्क को जीवन की निधि बताया।

श्री पूनम सूरी का विशेष धन्यवाद करते हुए श्री विश्वनाथ जी ने आशा व्यक्त की कि उनके प्रधान बनने से डी. ए. वी. प्रबन्धक समिति और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा में एक अभूतपूर्व परिवर्तन आयेगा और दोनों ही संस्थाओं के स्वर्णिम दिन फिर से लौट आयेंगे। इस महान पर्व पर देश के कोने–कोने से लगभग दस हजार की संख्या में आये आर्य महानुभाव उपस्थित थे। कार्यक्रम के आरम्भ में विशेष हवन हुआ। दिल्ली उपसभा की प्रधान डॉ. निशा पेशिन ने स्वागत भाषण दिया और स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों को प्रचारित करने का संकल्प दोहराया।

इस अवसर पर 14 संन्यासियों और वैदिक विद्वानों को 21,000/– रुपये, शॉल और प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। आर्य संन्यासी सुमेधानन्द जी ने आशीर्वाद दिया। स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन पर एक मन–मोहक नृत्य–नाटिका प्रस्तुत की गई। सेवा प्रकल्प के रूप में जरूरतमंदों को 1000 कम्बल, 2000 कुर्ता–पायजामा तथा दृष्टिहीनों को 40 सी. डी. व डी. वी. डी. प्लेयर प्रदान किये गये।

''नियम सब तेरे तर्कपूर्ण, हैं सत्याधारित अर्थपूर्ण।
सत्यार्थ प्रकाश पढ़े सिरताज, तू कह रहा हे आर्य समाज।।
तू आर्य संगठन सार्वभौम, है मात्र उपास्यदेव तव ओ३म्।
तू सत्य अर्थ का राजराज, हे आर्य समाज! आर्य समाज।।
आर्य समाज के सिद्धान्तों को, कर लें स्वीकार यदि सब देश।
मिट जाएँ विश्व में सभी क्लेश, पहुँचे सर्वत्र यह सन्देश।।

– 318, विपिन गार्डन, उत्तमनगर, नई दिल्ली–59,
मो.:–7503070674

होली मिलन समारोह हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर गली रविदास नवी करीम, नई दिल्ली–110055 में बड़े ही उत्साह के साथ तीन दिवसीय होली मिलन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। प्रथम दिवस स्वामी आर्यवेश जी संयोजक सार्वदेशिक सभा संचालन समिति दिल्ली के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ जिसमें अनेकों श्रद्धालुओं ने भाग लिया, इस अवसर पर श्री सत्यव्रत सामवेदी, कार्यकारी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली–2, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए कहा कि कल 23 मार्च के दिन शहीदे आजम भगत सिंह को फांसी पर लटका दिया गया था, लेकिन अंग्रेजों ने भगत सिंह का लोहा माना और मजबूरन अंग्रेजों को भागना पड़ा। ये थे आर्य समाज के सपूत। भगत सिंह से प्रेरणा लेकर आज के नवयुवकों को देश के गद्दारों से डटकर मुकाबला करना चाहिए क्योंकि ये देश के ठेकेदार नेता हमारे राष्ट्र को बेच देंगे।

पूर्व विधायक श्री मोती लाल सोढ़ी जी ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जो राष्ट्र निर्माण में अग्रणी भूमिका निभा सकती है क्योंकि आर्य समाज ने देश की आजादी में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया था। समारोह की अध्यक्षता कर रहे श्री जगमन्दर सिंह कन्डेरा, अ. भा. बा. स. वि. पं. राष्ट्रीय अध्यक्ष ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कन्डेरा जी ने कहा कि होली पर्व हमारे समाज का पवित्र पर्व है इसमें अपने आपस के मनमुटाव को बिल्कुल भूलकर त्यौहार मनाने का संकल्प लेना चाहिए ये हमारे भाई चारे का प्रतीक पर्व है। जिससे समाज में एकरूपता आ सके और हम एकजुट होकर राष्ट्र की सेवा कर सकें। स्वामी चन्द्रवेश जी ने यज्ञ का दो दिन ब्रह्मत्व बखूबी निभाया। श्री राम लाल बंसल अध्यक्ष ब्लाक कांग्रेस कमेटी ने भी सभा को सम्बोधित किया, श्री रणबीर शास्त्री जी ने अपना शक्ति प्रदर्शन बड़े चमत्कारी रूप से दिखाया। नवी करीम के आस–पास के बड़े–बड़े गणमान्य व्यक्तियों ने हर्षोल्लास के साथ फूलों और चन्दन से अपने आपस के मनमुटाव भूलाकर गले मिलकर एक दूसरे को होली और नव सम्मत, 2070 की हार्दिक शुकामनायें दी।

समारोह के मंच का संचालन वैदिक विद्वान् डॉ. ऋषिपाल शास्त्री जी ने बड़ी कुशलता के साथ किया और होली पर्व की हार्दिक शुभकामनायें दी, मन्दिर के प्रधान श्री सुशील नागपाल जी ने सबका हार्दिक धन्यवाद व आभार व्यक्त किया। हमारे विशेष सहयोगियों में श्री मोहन लाल वासन, श्री तोता राम, श्री अनिल नागपाल, श्रीमती लता सोढ़ी, श्री शशि दुरेजा, श्री ब्रह्म प्रकाश आदि–आदि ने खुशियों के साथ प्रसाद ग्रहण किया और कराया। **– डॉ. ऋषिपाल शास्त्री**

गुरुकुल वैदिक आश्रम, वेदव्यास का 53वाँ वार्षिकोत्सव संपन्न

गुरुकुल वैदिक आश्रम, वेदव्यास, राउरकेला–4, ओडिशा का 53वाँ वार्षिकोत्सव व ऋषिबोध महोत्सव विगत् 8 मार्च, 2013 से प्रारम्भ होकर 10 मार्च, 2013 को सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस 3 दिवसीय महोत्सव में वेदपारायण महायज्ञ, वेदप्रवचन, भजन समारोह, ब्रह्मचारियों की व्यायाम क्रीड़ा प्रदर्शन का अयोजन किया गया। परिव्राजक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने ओ३म् ध्वजारोहण किया। पं. वीरेन्द्र कुमार पण्डा, पं. नकुल देव शास्त्री व पं. सुरेन्द्र कुमार उपाध्याय ने यज्ञ परिचालना की। आचार्य कर्मवीर, संपादक, अग्निदूत जी ने अपने उद्‌बोधन में आदर्श गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था और आर्य समाज से सफल मानव जीवन निर्माण पर बल दिया। मुख्याधिष्ठाता आचार्य डॉ. देवव्रत ने कार्यक्रम का संचालन किया। मथुरा से आचार्य अरविन्द जी ने भाग लेकर आर्य समाज को आगे बढ़ाने पर अपना प्रस्ताव रखा, आचार्य सुदर्शन देव, गुरुकुल हरिपुर के संचालक ने आर्य समाज के प्रचार–प्रसार हेतु संवोधन किया। स्वामी आत्मानन्द सरस्वती, श्री रघुनाथ नायक, श्री दीनबन्धु साहु, स्वामी सोमवेश आदि आर्य नेताओं ने अपने–अपने वक्तव्य में वेद मार्ग पर चलने को संबोधित किया। गुरुकुल के आचार्य भीमसेन पण्डा ने समाज सुधार पर बल दिया। श्री रामचन्द्र साहू व श्री सुभाष चन्द्र साहू ने भोजन व्यवस्था का संचालन किया। आचार्य शंकर मित्र जी और साथियों ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किये। पं. धनेश्वर बेहेरा ने सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन किया। **– पं. धनेश्वर बेहेरा**

वैदिक सार्वदेशिक 04 से 10 अप्रैल, 2013

NDPSo on 5/6 अप्रैल-2013

प्रकाशन की तिथि : 4 अप्रैल, 2013

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488

डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14

Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

प्रभु की शरण में यश और सुख

पदं देवस्य नमसा व्यन्तः श्रवस्यवः श्रव आपन् अमृक्तम्।
नामानि चित् दधिरे यज्ञियानि भद्रायां ते रणयन्त सन्दृष्टौ।।

- ऋ. 6/1/4

ऋषिः- **भारद्वाजो बार्हस्पत्यः।।** देवता-**अग्निः।।** छन्दः-**निचृत्त्रिष्टुप्।।**

विनयः- हे देव! हमने तुम्हारे पद के, तुम्हारे प्राप्तव्य-स्वरूप के, तुम्हारे चरणों के दर्शन पाये हैं, तुम्हें बार-बार नमस्कार करते हुए, तुम्हारी स्तुति करते हुए, तुम्हारे आगे झुकते हुए, भक्तिभाव से आत्म-समर्पण करते हुए ही हमें तुम्हारे दुर्लभ पद के दर्शन मिले हैं। यह सब तुम्हारी भक्ति की महिमा है। इसके साथ ही मेरी पुरानी यश पाने की इच्छा भी तृप्त हो गई है। तुम्हारी कृपा से ऐसा यश मिला है कि जो कि मृदित नहीं हो सकता। बाहर के मनुष्यों से मिलने वाला यश तो उनके अधीन होता है, वह मृदित होता रहता है, परन्तु तुम्हारे पद-दर्शन से जो अन्दर का यश मिला है वह अक्षय है, उसे पाकर अब मुझे किसी वाह्य यश की आकांक्षा नहीं रही है। तेरे सेवकों को संसार में सज्जन पुरुषों द्वारा भी बहुत सा यश मिला करता है, पर वह भी तुझ द्वारा मिले इस आन्तर यश की ही छाया होती है। हे अग्निदेव! तेरी भक्ति ने मुझे उबार दिया हैं तेरी भक्ति का तो इतना प्रताप है कि यदि कोई तेरे यज्ञार्ह (यज्ञ में उच्चारणीय) पवित्र पुण्य नामों को ही केवल धारण करे, उन्हें वाणी से बोलता हुआ भक्ति से हृदय में गुँजाता रहे, तो इस नाम-जपन, नाम-धारण से ही उसका अन्तःकरण इतना शुद्ध हो जाएगा कि उस पर तुम्हारी कल्याणमयी दृष्टि हो जाएगी। तुम्हारी कल्याणमयी दृष्टि में रहता हुआ वह सुख से आगे बढ़ता जाएगा, उसके व्याधि, स्त्यान आदि विघ्न हरण होते जाएंगे, वह निर्विघ्न सुख से उन्नत होता जाएगा।

तो क्या, हे अग्ने। हम तेरे पवित्र नामों को भी धारण न कर सकेंगे? यह तो कम से कम है जो हमें तुम्हारी ओर पहुँचने के लिए करना चाहिए। हमें तो तुम्हारे प्रेम के मार्ग में अन्त तक जाना है और एक दिन यह कह सकने का योग्य होना है ''हमने तेरे पद के दर्शन पा लिए हैं और अनश्वर यश के भागी हो गये हैं।''

शब्दार्थः- श्रवस्यवः= यश की इच्छावाले हमने **देवस्य=**तुझदेव के पदम्=प्राप्तव्य स्वरूप को **नमसा व्यन्तः=**नमस्कार द्वारा देखते हुए **अमृक्तम्=**नृदित होने वाले **श्रवः=**यश को **आपन्=**प्राप्त किया है। जो लोग **यज्ञियानि=**यज्ञार्ह **नामानि चित्=**नामों को ही **दधिरे=**धारण करते हैं वे भी **ते भद्रायां सन्दृष्टौ=**तेरी कल्याणमयी दृष्टि में **रणयन्त=**रहते हुए सुख पाते है।।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा मेंः-

अवितरण की दशा में लौटाएँ-
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन,
रामलीला मैदान/आसफ अली रोड़, नई दिल्ली-110002

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी ओ३म् हरिद्वार

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर–घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायेरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक,
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक
दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व
थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ट
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार
डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी – 249404 जिला – हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन – 01334-246073

प्रो० कैलाशनाथ सिंह, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा सक्सेना आर्ट प्रिंटर्स : सैड-26 ओखला फेस-1, नई दिल्ली-110020 से प्रकाशित एवं मुद्रित।
(फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216) सम्पा. : प्रो० कैलाशनाथ सिंह (सभा मन्त्री) मो.:0.9415017934
◆ ई-मेल : Sarvadeshik@yahoo.co.in ◆ वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।